अर्थात्

रसिकविलास

जिसमें

श्रीकृष्णचन्द्र जनमनानन्दकन्द श्रीराधिकाजीके चरित्र चित्तानन्ददायक विविधविहार अनुसार रसिकजनों के मोदार्थ वर्णित हैं ॥

जिसको

अयोध्यापुरी निकटवर्त्ति भदरसाग्राम निवासि पण्डित शिवराज मिश्र ने निर्मित किया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापागया [illegible]

भूमिका ॥

ग्रन्थारम्भसे प्रथममनोरथ ने यहआज्ञादी कि प्रथमग्रन्थ निर्माण का कारण और ग्रंथकागुणलिखाजावे ॥

ग्रंथनिर्माणका कारण ॥

कारण ग्रन्थ के बनाने का यहहै कि प्रायः देखागया है कि उत्तम कुलके लड़के जब कि कुछ पढ़ लिख निकले और कुछ बुद्धि और विद्याका प्रबेश उनकी बालप्रकृतियोंके साथ मिलकर उनके हृदयोंमें हुआ और वे किशोर अवस्था को पहुंचे अर्थात् सोलह सत्रहवर्षकी उनकी वय हुई तो वे उस थोड़ी बुद्धि व विद्याके कारण ऐसे दुःखके जालमें पड़जाते हैं कि उससे छूटना अत्यन्त कठिन होजाताहै अर्थात् यातो वे किसी चन्द्रमुखी के अनुराग अर्थात् इश्क में उस चन्द्रमुखै के ऐसे चकोर बनजाते हैं कि एक छिनभी बे दर्शन चैन नहीं पड़ता, या वे किसी ऐसे लावण्ययुत रूपपर मोहित होजाते हैं कि उस अधरामृत के पिये बिन कि जिसकी मधुरताके समान जगत् में कोई दूसरा मिष्टान्न नहीं है जगत् के षट्रस खारहोकर अपना जीवन उनको करुआ होजाता है या किसी ऐसी मृगलोचनी चितवनि की कटाक्ष के तीखे बाणों से हृदय उनका बिधजाता है कि जिसकी पीर गम्भीर अत्यन्त दुःखदायी और निरौषध व निरुपायी है अथवा उनको किसीकी मीठीतान मधुरे स्वरों का गान प्रसन्न आजाता है कि बिनासुने उस मधुरे बयन के हृदय अचैन और नयनों में नीरभरे रहते हैं और महादुःख के जालमें पड़े अकुलाते हैं परन्तु कुलवंत होने के कारण और अपमान के भय से अपने उरकी पीर हृदय अभ्रीर में

छिपाये रहते हैं और अपने अंतःकरण की पीर कभी किसी से नहीं बताते जब कोई मित्र उन का मुखमलीन तन क्षीण दुर्बल शरीर नयनों में नीरदेखकर उनका भेद पूछता है तो लज्जावश दूसरीबात बनाकर उसबातको टालजाते हैं और किसी कार्य में चित्त उनका न लगकर रात्रिदिन अपने अनुराग्य अर्थात् माशूक़ की चिन्तामें रहकर महादुःख पाते हैं अब इस अनुराग अभागी का वृत्तांत क्या लिखाजावे कि यह मनुष्य का कैसारूप बनादेता है इसके वृत्तांत लिखने में एक पुस्तक ऐसेही बनजावैगी परमेश्वर इस व्याधि असाध्य से बचावै परन्तु जब मनुष्य इस अनुरागरूपी व्याधिमें ग्रसित होजाता है कि जिसकी ओषधी सिवाय आ- लिङ्गन अर्थात् मिलन के दूसरी नहीं है निरुपाय होकर निदान को अत्यंत अकुलाता है हां ऐसी पुस्तकों के अवलोकन करने से और सुनने से कि जिसकी कविता लालित्य है और श्रीकृष्ण चरित्र और रसिक कवियोंकी वार्ता और शृंगार रससे भरी है शोकका पहाड़ मनुष्य के हृदय से टलकर जीवको कुछ २ अव- काश मिलता है इस कारण शिवराजमिश्र मतिमंद सुत द्विजवर रामानंद अयोध्यापुरी निकट भदरसाग्रामनिवासी कुटिलकुचाली कलंकित कामी महामूढ़ पतितन में भामी अज्ञान अचेतअभागी श्रीकृष्णचंद्र चरणानुरागी नें इस ग्रंथ अनुरागलतिका को कृष्ण भक्तों और रसिकों के निमित्त अनुरागियों अर्थात् आशिकों के अंतःकरण के पीरकी ओषधी निर्माण की ॥

गुण ग्रंथका ॥

इस ग्रंथ के पठन पाठन में यही गुण नहीं है कि केवल मनुष्यों का चित्त बहलजावे बरन बड़ाअद्भुतगुण इसमें यहहै कि

इस पुस्तक में श्रीकृष्णचंद्र आनंदकंद साक्षात् स्वयं ब्रह्म परमेश्वर और श्रीराधाजी महारानी ब्रह्ममाया श्रीलक्ष्मीजीका गुणानुबाद कि जो चारिउ पदार्थ अर्थात् अर्थ धर्म काम मोक्ष का दाता है लिखाहुआ है कि जिसके स्मरण से लक्ष्मीनारायण के कमल चरणों में अनुराग उत्पन्न होताहै ॥

ग्रन्थकारकी मनोवृत्ति ॥

प्रकट हो कि इस पुस्तक की रचना में ग्रन्थकार ने किसी दूसरे कविके छन्दों का प्रयोग नहीं किया जैसा कि बहुधा ग्रन्थकार लोग अपने ग्रंथों में दृष्टांत इत्यादि के स्थल में दूसरे कवियों की कविता लिखकर ग्रंथों को सुशोभित करते हैं यह बात उसबातके सदृश होतीहै कि जैसे कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य का बस्त्र मांगकर पहिन लेवै इस कारण जिस स्थान में दृष्टांतालंकार की आवश्यकता पड़ी है सो उस स्थलमें निज भनित छन्द बस्त्र व आभूषण रूपोंसे इस शरीररूपी ग्रंथ को अलंकृत किया है ॥

रामगति अर्थात् परमेश्वरकी शक्तिका बर्णन ॥

अरलछन्द ॥

देखिये क्याशक्ति है भगवान की। जगतगति अनुरागपर निर्मान की। जो न उर अनुराग का होता सदन। लोक अरु पर-लोक कुछ पड़ता न बन १ कोई मनतो उच्चपदवी चहत है। रूपके अनुराग नलकोई दहत है। कोई निशिदिन द्रव्यका है बावला। चित्रके सदृश्य मुद्रामें लगा २ कोई मनके भर्मसेहै भर्मता। कोई मोहित अपने गुणवा स्वभाव का। हितहै कोई रूप रसके पानका। है कोई तृष्णत्व पदनिर्बान का ३ द्रव्यकी संचय में कोई है मत्गा।

दीपरूपी रूपका कोई पतंग। कोई अपने दानपर सुखमानहै। कोई को निजरूप का अभिमान है ४ मान करता है कोई निज रूपको। देखिके मुख आरसी अनुरूपको। कोइ को अनुरागधरती धामका। कोइ को मुखगौरपर तिल श्यामका ५ अन्नजल कारण दुखित कोइ होरहा। कोइ निद्रामें समयको खोरहा। कोई अनुरागी दरश अवतार का। फिररहा मथुरा अयोध्या द्वारका ६ कोईको स्नान तीरथका स्नेह। यात्राकरता है तजि परिवार वो गेह। कोई तत्पर ध्यान ब्रह्म अनादि में। होरहाहै शुद्धचित्त समाधिमें ७ कौन मन रीतो रहा अनुराग से। कौन जग में बचगया इस लाग से। सत्यरे शिवराज मनकी लागहै। जग्तका कारण यही अनुराग है ८॥

सूचीपत्र।

अनुरागलतिका भाषा ॥

प्रार्थना गणेश इत्यादि देवताओं से ॥

दोहा छन्द ॥

श्रीगिरिजासुतसुखकरन् हरनतापत्रयशूल ।
जगपावनभावनसदा. विमलज्ञानवरमूल १

भालतिलक सिंदूरको जलजनयनरतनार । कांचन कान्तिशरीरद्युति शोभितपटअरुणार २ सिद्धिरूपसुषमासदनसुलभसुआनँदऐन .। चरणशरणहों दीजिये विमल बुद्धिवरबैन ३ चरणकमल शिरधारिके प्रणवों बारंबार । विमलज्ञानदेशिवसुवन लीजैयशसंसार ४ मेरीइतनीमतिकहां जोलेखोंकछुबात । तव चरणनके आसरे लईलेखनीहाथ ५ शारदचरणमनायके शिरअरु लोचनलाय । बारबारबिनतीकरों दीजैग्रन्थबनाय ६ तेरोगुणकोकहिसकै ऐसोकबिजगकौन् । तवमूरतिउर धारिकैधरेरहोंमनमोन ७ सब घट घट जगव्यापिनी चाखि युगत्रयकाल । दयाशालिनीदीजिये सुन्दरकण्ठ रसाल ८ आदिमध्यअौसानकी. जानतिहौसबबातें ।

आदिज्योतिश्रीशारदा तुमसेकाहदुरात ६ यासोंनहिं निजअन्तको तुमसेकहतवखान । मेरेचितकी जानके मातुदेवसोइदान १० ॥

स्मरण निराकार ब्रह्म का ॥

मनबानीकीगतिनहीं जाके रूप न रेख । तागुणको केहिविधिलिखों अलखअरूपअलेख १ सकलजगतका रणकरन सारणजगव्योहार । सिरजतपालतहरतपै रहतजग्तसेन्यार २ नहिंउपजैबिनशैनहींकर्मलहैनहिं ताहि । स्वयंसच्चिदानन्दघननिगमकहतइमिगाहि ३ आदिसृष्टिसेभनतहैं निगमशारदाशेष । ब्रह्मरूपगुण आजलों कहिनसक्योलवलेश ४ बिधिहरिहर श्रुति शारदाऋषिमुनिआठोयाम । जाहिरटत ताहीकरोंबारं बारप्रणाम ५ ॥

गुरुकी प्रशंसा ॥

श्रीगुरुचरणनयुगलरजकरिदृगअंजनसार । लखत चरितयहजगतको उपजतब्रह्मबिचार १ वाकोगुरूप्रशं सियेदियोजो बिद्यादान । तामेंफिरिदरश्यो सभी मंत्र यंत्रगुणज्ञान २ करियप्रशंसाताहिकी जो हृदय तिमिर हरिलीन । ज्ञानकोदीपकबारिकै हृदयधामधरिदीन ३ गुरुकी महिमाअगमहै कापैबरणीजाय । ब्रह्मरुमाया जीवको भेददियोबिलगाय ४ रत्नाकरमेरोहियोरत्नरूप नवछन्द । गुरुकी कृपाकटाक्ष से प्रकटत नितसानन्द ५ ॥

वृत्तांत सृष्टिके उद्भवका और स्थितहोना नारायण व लक्ष्मी व शेषजी का क्षीरसमुद्र में ॥

दोहा ॥ अबआदिहिसेकहतहौं सुनियो सुजन सुजान ।

जाविधिजगमेंअवतरत अलख पुरुषनिर्बान १ महाप्रल यकेअन्तमें सकलसृष्टिह्वै नाश। रहत न अरु कछु दूसरा केवल ब्रह्मप्रकाश २ याहिभांतिकछुकाल लै रहि करब्रह्म अरूप। फिरि निजइच्छासेचहत लखो आपनो रूप ३ तबनिजमाया प्रकटि कै निजइच्छा आधीन। मायासेफिरप्रकटत सतरजतम गुणतीन ४ त्रयगुणसे निर्मितकरत बिमलतत्त्वयहचारि। प्रकट नाम ताकोभयोअनल अनिल छितिबारि ५॥ चतुष्पदी छन्द ॥ फिर मायाप्रेय्योसेदिशिहेय्यो ब्रह्मशक्तितामेंदीने। सोइजगमायासिरजनिकाया चतुरतत्त्वमिश्रितकीने॥ नभअरु अनिलअनलजल छितियुत प्रकटिमहायक पिंडभयो। तामेंसबअङ्गाअतिहिसुरङ्गा प्रकटतदशशतमुंडभयो ६ दोहा॥ स्वईपुरुष कछुकाललगि रह्योसोनिपट अचेत। ब्रह्म शक्ति तेहि प्रबिशिकरि कियो सो सगुण सचेत ७ अतिबिशालतनु उरभुजामहातेजबपुगोर। अतिशोभित सुंदर महा नहिं उपमा कोइ और ८ नील बसनशोभित सुतन भूषण अंगरसाल। जगमगात कुण्डल करण मणिकृत मुकुट सुभाल ९ निराकार निरधार अज भयोसोहमिसाकार। जगदाधारसो शेषके नामअनन्त अपार १० स्वई शेषकछुकाललै कियोसलिलमेंशयन। दूसर तन जिमि निर्मयो ब्रह्म लिखों सो बयन ११॥ घनाक्षरी ॥ फेरिनभमांझएकबिमलबिशालज्योति अति उग्रभांतिकांति चटकप्रकाशीहै। ताहिकै प्रकाशसेअकाश सबपूरिरह्यो सोईज्योतिरूपरूपब्रह्मअबिनाशीहै॥ सोईज्योतिमांझएक पुरुषचतुरभुज प्रकट्योअनूपरूपआ

नँदकोराशी है । कहतशिवराजनिर्गुण निराकारब्रह्मस गुणभयोजोसर्बमयीसर्बबासीहै १२ ॥ सवैया ॥ तनश्या मअतिहि अभिराम महापटपीतपुनीत सुअंगसुहायो । बहुरंग अभूषणअंगलसैं मणि गुन्थितदाम ललामब नायो ॥ मणिमाणिक शीशकिरीटसजे जेहिकीद्युतिसर्व अकाशहिं छायो । शिवराज सो ज्योतिअपारमहा जेहि को कछु बेदहु भेद न पायो १३ ॥ दोहा ॥ शेषबत्त पर शयनकरि नारायण करतार । निजमाया को रूप तब प्रकट्यो सलिलमँझार १४ आदिशक्ति लच्मीस्वई तन धरि प्रकटी आइ । नारायणको चरणगहि रही सो निज उरलाइ १५ ॥ सवैया ॥ द्युतिकीद्युतिज्योतिकी ज्योति सोई जो अरूप हती सो स्वरूप भईहै । तनअम्बरलाल रसालअभूषण राजत अंगअनूपनईहै ॥ लच्मीसोईलच्छ गुनोंसेभरीपरब्रह्मकीशक्तिकोरूपयहीहै । शिवराजकहै छबिकीछबि आयसुअवसरपाय 'स्वरूपलही है १६ ॥ घनाक्षरी ॥ नाभिसेनारायणके कमल प्रकटभयो तामेंचतु राननको रूपदरशायो है । श्वासपद्म नाभिकी प्रबिशि बिधिउरगई सोईश्वासबिधिमुख बेद कहवायोहै ॥ सोई बेदब्रह्मअरुजीवअरुमायाकेर सृष्टि की बिभूतिआदिभेद सबगायोहै । कहत शिवराज तबैदेवदनुं मनु आदि ब्रह्म शक्तिपाइब्रह्मासकल बनायो है १७ ॥ दोहा ॥ जीवमूल अरुधातुयेत्रिबिधि सृष्टि में लागि । ब्रह्मशक्तिफिरइमि बसी जिमि चकमक में आगि १८ ॥

बार्तिक भाषा ॥

जोकिआदिसृष्टिकी उत्पत्तिमें भिन्न २ पुराणों और

ज्योतिषादिशास्त्रों और ग्रंथकारों में मतान्तर हैं अर्थात् किसी२पुराण में तो प्रथम परब्रह्मसे पुरुष और पुरुषसे प्रकृतिकीउत्पत्ति और उससे सर्व्वसृष्टिकाबिस्तार लिखा है और कोई २ पौराणिक और ज्योतिषी प्रथमपंचतत्त्व अर्थात् जल अग्नि बायु अवनि आकाश का उद्भव बतलाते हैं यहां तक कि एकही पुराण में कई २ मत पायेजाते हैं जैसा कि श्रीमद्भागवत में बेदव्यासजी व नारदमुनि और मैत्रेय आदि ऋषीश्वरोंमें मतांतर है कि एक आचार्य दूसरे आचार्यके बाक्योंको खंडनकरताहै और एक पण्डित का मत दूसरे पण्डित के मत के विरोधहै इस कारण मनको शांति न प्राप्तहोकर चित्त में भ्रम बनारहताहै परन्तु जो कि मेरा तात्पर्य केवल कृष्णराधाचरित्र वर्णन करनेको है इस कारण इस लघु ग्रंथमें बिस्तारपूर्वक ब्यवस्था सृष्टि की नहीं लिखी गई और न इस बातका निर्णय किया गयाहै कि उस परब्रह्मपरमेश्वर आदिपुरुष अविनाशी सृष्टिकारने प्रथम कौनसा तत्त्वइन पच्चीस तत्त्वोंमेंसे अर्थात् अग्नि, आकाश, पवन, पानी, अवनि, अहङ्कार, पुरुष, प्रकृति, सत्, रज, तम, त्वक्, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रस, रूप, हस्त, चरण, उपस्थ, बायु, मन, बुद्धि, चित्त, जीव बनाया है और छब्बीसवां तत्त्व सर्व तत्त्वों का मूल आप होकर इस संसार को कब और किस निमित्त प्रकट कियाहै सारांश बचन तो यहहै कि उस अनादिने अपने गुणोंके आदि अन्तका भेद बेदको भी जोकि अपने को निपट उस ब्रह्म की श्वासा बतलाते हैं नहीं बतलाया है फिर मनुष्यकी

क्यासामर्थ्यहै जो उसकी महिमा के भेदोंको पासके॥दोहा॥
आदि तत्त्वके भेदकी सुधि पायो जो कोय। सारवचन शिवराजको निज सुधि रही न सोय १ इति श्रीकृष्ण राधाचरित्रे शिवराजमिश्रकृतेऽनुरागलतिकानामकग्रन्थे सृष्ट्युत्पत्तीत्यादिवर्णनोनामप्रथमःसर्गः १॥

अवतारलेना नारायण व लक्ष्मीजी व शेषजीका ब्रजमण्डलमें श्रीकृष्ण व राधिका व बलरामजी के नामसे और बाल-बिनोद इत्यादि लीलाओंसे सुखदेना अपने भक्तोंको॥

दोहा॥ अबकलुबर्णौं सगुणरस शोभितजगअभिराम। श्रीराधाअरुकृष्णयश लीलाललित ललाम १ जबत्रेताकेअन्तमें भयोभूमिपरभार। गोतनधरि धरणीकियो देवनशरणपुकार २ तबब्रह्माशिवइन्द्रअरु इतरदेवकीभीर। पृथ्वीकोसंगलैचले पयसमुद्रकेतीर ३ ब्रह्मादिकसबदेवता स्तुतिकरैंपुकार। महाराजकीजै दयाहरोभूमिकोभार ४ नभबाणीतबइमिभईसुन्दर गिरासोहाय। सकलदेवब्रजभूमिपर तुमअवतरियोजाय ५ समयपायब्रजआइहौंशेषरुरमासमेत। धारणकरिहौंमनुजतननिजभक्तनकेहेत ६ निजभक्तनसुखकाजजंगिकरिहौंक्षयसंहार। कलुककालतहँबासकरिहरिहौंमहिको भार ७ सुनतसकलब्रह्मादिसुर कियेबहोरिप्रणाम। ब्रह्मगिरालवलीनमन गयोसोनिजनिजधाम ८ नारायणतब इमिकह्योशेषरमासमभाय। सुरहितलगिब्रजभूमिमेंनर तनधरिहौंजाय ९ यासेतुमसौंकहतहौंधरिधरिमनुजस रूप। चलिब्रजमेंलीलाकरोप्राकृतनरअनुरूप १० तब

निज२ प्रतिबिम्बकोपयसमुद्रमेंराखि। चलेसोब्रजमेंऔ तरननिगमभरतइमिसाखि ११ शेषकियोबसुदेवगृहगर्भ रोहिणीबास। गईरोहिणीनन्दगृहकंसासुरकीत्रास १२ त हँरोहिणिकेगर्भमेंबासकियोदशमास। प्रकटभयोफिरि भानुसमद्वादशकलाप्रकाश १३ आनँदबदनअनूपछबि शोभासुषमाधाम। यहिबिधिआयो शेषब्रजनामभयो बलराम १४ तबदेवकिकेगर्भमेंआयोश्रीभगवान। येबसु देवकिदूसरीनारीमहासुजान १५ धारिचतुर्भुजरूपतब पूरणब्रह्मप्रकाश। मातुपितादरशनदियोकेशवरमानिवा स १६ याबिधिब्रजमेंअवतरेनारायणकरतार। बासुदेव भगवानकेनामअनंतअपार. १७ ऐसेब्रजहरिअवतरेबेद बचनपरमानु। लक्ष्मीजीश्रीराधिकाभईसुता बृषभानु १८ यासोंप्रीतिपुरातनीरहीउभयउरगोय। समयपायप्रक टतभईकहौंकथाअबसोय १९॥

आना श्रीकृष्णजीका मथुरासे गोकुलमें नन्दमहरके स्थानपर और बालबिनोदका सुख दिखलाना नन्द व यशोदाको और अ- नुरागी होना ब्रजगोपियोंका उनके स्वरूपपर बाल्यावस्थासे॥

दोहा॥ धरेचतुर्भुज रूप जब बासुदेव करतार। देवकि ढिगठाढ़ेभयेपूरणकलाप्रचार १ शंखरुचक्रगदापदुमधरे सोआनंदकन्द। मानोंप्रकटप्रभावभोकोटिभानुअरुचन्द २ सोरठाछन्द॥ देवकि अरु बसुदेवपुलकिगातलोचनस जल। आनँदहृदयभरेवपायदरशत्रिभुवनपती ३ दोहा॥ फिरि बालकको रूपधरि करि माया बिस्तार। करुणा मय रोवनलग्यो निर्धारन आधार ४ बालकृष्णलखि देव की अरु बसुदेवसुजान। उरलगायमुखचुम्बते वारतत्न

धनप्रान ५ ताहिसमयवसुदेवजी बालकलियोउठाय । गो
कुलमांझसोनन्दगृहतुरतहिपहुँचोजाय ६ यहांजोगमाया
लियो नंदगेहऔतार । निद्रावशसबको कियो निजइच्छा
अनुसार ७ वासुदेवकोराखिके यशुदाजीकेगोद । कन्यालै
बसुदेवफिरि गमनेसहितप्रमोद ८ सोकन्यालेकरगयो कं
सरायकेपास । कंसनृपतिकेहाथसे सोउड़िगईअकास ६
यहांयशोदानींदसे उठिकैभईसचेत । बालकअनुपमदेखि
कै आनँदउरभरिलेत १० श्यामअमललोचन कमल
भृकुटीबंक बिशाल । चारुचिबुकश्रुतिनासिकाअधरमनो
हरलाल ११ ताकीछबिमैं किमिकहौं छोटेमुखबड़िबात ।
रूपरंगशृंगाररस शोभाजाकेहाथ १२ नंदचकृत छबि
देखिकै ठाढ़ेबिबशसनेह । यकटकरहेनिहारते मानोभये
बिदेह १३ सोरठा ॥ भयोसोपूरणकाम नंदमहर नंदलाल
लखि । वारत धन अरु धाम कछुक गेहराख्यो नहीं १४
करत गन्धरबगान नभपर नाचत अप्सरा । सुरसबचढ़े
बिमान बारबार बरषत सुमन १५ दोहा ॥ बिबिधप्रकार
के बाजने बाजत तालसप्रीति । करत गान मधुरे स्वरन
सांगीतनकी रीति १६ बधाई ॥ अनहदध्वनि मानोघन
सीगाजैं, नन्दमहरकेद्वारें । माईनन्दमहरकेद्वारें । मृदंगी
मृदंगउमंगबजावत सकलतालसुरसमानभावतताधिलां
गतूम तूमतनानननानना बाजतबीन सितारें । माई० ॥
करिकिरिगान सखिनसबनाचतसरसतालघूंघुरगतिबाज
तमधुरस्वहायेछूंमछूमछत्ताननानना अद्भुतकलाअपारें ।
माई० ॥ निरखतदेव सकलनभछाये हरषितगगन सुमन
बरषाये नंदभुवनत्रिभुवनपतिआये सुरपुर देवपुकारें ।

माई० ॥ लखिलखिलोगसकलअनुरागेअतिउछाहआनँ
दरसपागे कहेशिवराज निरखिसुषमाबरमदनकोटिछबि
वारें। माई० ॥ सोरठा ॥ उतरैंजलधिगंभीर लघुपिपीलि
निजशक्तिकब । असकबिकोमतिधीरकृष्णजन्मउत्सव
कहै १७ करिकरिबालबिनोद मातुपितानितसुखदयो।
भरीयशोदामोद गोदलियेत्रिभुवनपती १८ जामेंगिरा
अधीरशेषगणेश न कहिसकत । ऐसोकोमतिधीरयशु
मतिउरआनँदलिखै १९ दोहा ॥ बारबारउरलायकर
वारिवारिधनधाम । आनँदकँदमुखचुम्बतीमोदभरीनँद
बाम २० उतरियशोदागोदसेंखेलतअजिरमँझार ।
मधुरमनोहरकिंकिणीनूपुरकीझँनकार २१ कबहुँयशोदा
गोदमेंबिहँसिकरतकिलकार । कबहुँमचलकर भूमिपर
लोटतबारहिंबार २२ सोरठा ॥ यशुदाकोगहिचीरच्छीर
हेतुरोवनलगे । कमलनयनभरिनीरनिरखिनिरखिमुख
मातुको २३ यशुमतिलियेउठायच्छीरप्यायअतिचायसों।
अरुबलरामबुलायखेलनसंगमोहनकह्यो २४ चौपाई छन्द ॥
खेलतश्यामरामदोउभैया। लखि लखि यशुमति लेत
बलैया ॥ ब्रजबनितादरशननितआवैं। निरखियुगललो
चनफलपावैं। गौररामसोहनतनश्यामा। कोटिकामशोभा
अभिरामा ॥ लखिलखिमधुरमनोहरजोरी। ब्रजबनिता
उरप्रीतिनथोरी॥ अबहींश्याम पांचबर्षनके। ब्रजगोपिन
केभावनमनके ॥ कामप्रभावमहाबलकारी। काहकरैंफिर
अबलानारी ॥ यहअसुरासुरसबहिनचांवै। यासोंभागि
कहांकोइजावै॥ बिद्याबुद्धिज्ञानगुणनेमा। भागिजातउरमें
लखिप्रेमा ॥ प्रतिदिननिरखिनिरखिनँदलाला। उरआ

नंदभरतब्रजबाला ॥ बालकमिसुलैकंठलगावैं। निजमन
कीनहिंकाहुसुनावैं ॥ कोइदगकमलनयनपरराखै । को
इमुखचूंबिअधररसचाखै ॥ बालकभावनहींमनलेखैं ।
रसकीदृष्टिश्यामकोदेखैं २५ सोरठ ॥ अतिकरालहैकाम
ब्रजबनिताकोदोषनहिं । मनकिरहैउरधामकामरूपघन
श्यामलखि २६ सवैया ॥कामप्रभाववर्णन॥यहकामअतिहिबल
वानमहायहिसोंजगमेंकोईपारनपायो । चतुराननशंकर
सुरपतिकोकेहिकोनहिंकामकलंकलगायो ॥ गुणज्ञानअरु
माननकाकोहरयोकेहिकेउरधामनज्वाललगायो । शिव
राजकहैऋषिराज छल्यौनरपामरतोगिनतीकेहिआयो
२७ दोहा ॥ देवी देवमनायके कहतसांझ अरुभोर ।
कबपुरवैंमनकामना ह्वैबर श्यामकिशोर २८ सोरठ ॥ या
बिधिसबब्रजबाम नागरिनवलनवीनबय । नितआवैंनँद
धाम श्यामदरशकेकारने २९ दोहा ॥ देवीअरुसबदेवता
चढ़ि २ बिमलबिमान । बालकृष्णछबिदेखते मनआनँद
अधिकान ३० कहतपरस्परबचनइमि क्योंनभयोब्रज
मांझ । त्रिभुवनपतिकोदरशनित करितभोरअरुसांझ
३१ घनाक्षरी ॥ क्योंनभयोजन्ममेरो कुञ्जनकीरजकेरो चरण
सरोजरोजछूतेनँदनंदको । बाटिकाबितानहोते कुञ्जकील
तानहोतेमारगबिहारबारहोतेसुखकंदको ॥ होतेजोचकोर
तोनिहारतेनचंदओरसाँवरोसलोनोगातदेखिब्रजचंदको।
कहतहैंशिवराज होतेबेणुबंशआज पीतेमाधौकेमधुरओं
ठअरबिंदको ३२ चौपाया छन्द ॥ प्रातसमयउठिमात य
शोदा रामअरुश्याम जगाये। उठियोलालनतुम्हैंपुकारन
ग्वालबालसबआये ॥ हरोपिताम्बरअरुनीलाम्बर मुखर

मनोहरदेखूं। भरोउछाहउमँगिआनँदउरधन्यजन्मनिज लेखूं ३३ कमलबिलोचन भवभयमोचन मोहनपलक उघारो। राजिवनयनासुनियोबयना कबकोभयोसकारो॥ ललितप्रभासे पूर्वदिशासेनभपरभानुप्रकासे। ज्ञानि उद्योतभानुकमलापति लोचनकमल विकासे ३४ बिथुरी अलकैं नींदीपलकैं भृकुटी धनुषचढ़ाये। तापर बानसान नयननके मानोंचहतचलाये॥ पीतबसनबहुरतनमनोहर मोतिनमालबिराजै। कहेशिवराजआज यदुबरछबिलखि रतिपतिमदभाजै ३५ सोरठा॥ उठेदोउबलबीर दृगमींजत द्वारेगये। ग्वालबालकीभीर देखिश्यामबोलेबिहँसि ३६ तुमसबसखासुजान कहांजात युथयुथबने। सांची कहौ बखानयामेंभेदनराखियो ३७ दोहा॥ श्रीदामातबइमिकह्यो सुनियेबचनगोपाल। गऊचरावनजातहैं बृन्दाबिपिन रसाल ३८ चौपाई॥ सखाबचनसुनिदूनोंभैया। आयेजहां यशोमतिमैया॥ यशुदासेबोलेघनश्यामा। कोटिकाम शोभाअभिरामा॥ मातु तिहारीआज्ञापावों। गऊचरावन मैंबनजावों॥ सुनतश्यामकीतोतरिबतियां। लियोल गाययशोमतिछतियां॥ लालनतुमखेलोनिजद्वारे। बृन्दा बनन्हिंजावदुलारे॥ मोहनममलोचनकेतारे। पलकनसे टुकहोहुनन्यारे॥ सुनतयशोमतिकेअसबयना। मचलपड़े महि राजिवनयना॥ रोवतमचलहि चकिअनश्यामा। थकीमनायनन्दकीबामा॥ ताहीसमयनंदगृहआये। भारि भूरिसुतकण्ठलगाये॥ भालतिलकसारेदधिकेरे। लिये बुलाय बालबहुतेरे॥ समझायोबहुभाँतिबालकन। तुम जानतजलथलबनउपबन॥ रामकृष्णबृन्दाबनजाते।

आंड़्योनाहिंराखियोसाथे ॥ दोहा ॥ यहिबिधिगऊचरावते मोहनअरुबलराम। बिचरतबनआनन्दमय शोभासुषमा धाम ३६ नवलबाटिका द्रुमलता बृन्दाबनचहुँओर। श्रीराधाबरबिहरते नागरनवलकिशोर ४० ॥ इति श्री राधाकृष्णचरित्रेऽनुरागलतिकानामकग्रन्थे कृष्णजन्मम होत्सवादिवर्णनोनामद्वितीयःसर्ग्गः २ ॥

फिरना श्रीकृष्णजीका बृन्दाविपिनमें और आना श्रीराधिकाजी का बनविहारको और दृष्टिपड़नी अचानक श्यामसुन्दर पर और मोहित होना राधिकाजीका उनके रूपपर और ब्याकुल होना श्रीराधिकाजीका श्यामसुन्दरके अनुराग में ॥

दोहा ॥ होनहारमिटतोनहींहोनीहोयसोहोय । भाल लिखेबिधिअंककोमेटिसकैकबकोय १ गुणऔगुणधन धामअरु यश अपयशरुकलंक। अवशिहोतबरिआइयां भाललिखेबिधिअंक २ कृष्णछबिबर्णन ॥ सवैयाछन्द ॥ नवनागर रूपरसालबनोबिहरैंबनकुंजबितानलमें । बहुफूलनहार शिंगारकियेमकराकृतकुण्डलकाननमें॥ शिखिपच्छनशीश किरीटलसैमधुरेस्वरगावततानलमें । शिवराजकहैमन याहीचहैसोईमूरतिराखियप्रानलमें ३ सोरठा ॥ इतनँद लालसुजानकुंजकुंजडोलतफिरत॥उतैसुताबृषभानआई बनछबिदेखने ४ पड़ोअचानकनयनमधुरमनोहरश्याम पर।लखिभोहृदयअचयनप्रेमबानउरमेंलगो।५ दोहा॥ चित्र समाठाढ़ीरहीदेखिरूपअभिराम । परमनागरीराधिका भूलींतनधनधाम ५ कमलनयनकरबांसुरीकेसरतिलक लिलार। नयनद्वारउरआनिकैदीनीपलककिवार ६ सोरठा॥ संध्यासमयबिचारिश्यामरायोनिजधामको । बैठीगोप

कुमारिहृदयबिलोकतिश्यामछबि ७ चौपाईछन्द ॥ कछुक बेरछबिध्यानमेंदेख्यो। आनँदरूपहृदयपटलेख्यो ॥ गई समाधिखुल्योजबनयना। फिर न लख्योतहँआनँदऐना ८ दोहा ॥ चकितबिलोकतिचहुँदिशामनहींमनपछिताय॥ चलीलाड़िलीभवनको तीरकरेजेखाय ९ भेदंनकाहू सेकहीरहीहृदयमेंगोय। खानपानरसरागरँगएकनभावत कोय १० बचनश्रीराधिकाजीका देशकी ध्वनिमें ॥ अबतोमोहनसँग अरझोप्रान। चितलेगयोचोरायबंशीकीतान॥रागरंगरस एकनभावत लागिलगनमोरी नागरनटसों कलनपरत घरीपल छिनछिन शिवराजकृष्णकोएकध्यान। अबतोमो हनसँगअरझोप्रान ११ दोहा॥बिरहज्वालउरसेउठी दाहत धामशरीर। लाजबिबशनहिंलाड़िली कहतहृदयकीपीर १२ घनाक्षरी॥ लाजकहैलालसानचितकीकाहूसे कहिमान कहैमोहिंभूलिहूनहींबिहाइयें। चित्तकहैमोहिंनहींचयन चित्तलयनबिनाआपमानराखिबिनयवाहिसेकराइये॥कहै मनमूढ़बरुसाहबकलेशगूढ़ निजहीरपीररोयलोग क्यों हँसाइये। चाहत शिवराजतापै पूरणप्रमोदआज बिनहिं इलाजब्याज चाहतनशाइये १३ सोरठा॥ ऐसीमनमेंठान मौनगह्योमनलाड़िली। तज्योज्ञानअरुमान भूषणबसन शिंगारसब १४ चौपाई ॥ क्षणमन्दिर क्षणबनओजावै। नटनागरकोदर्शनपावै ॥ घर आंगन कछुनाहिंसोहावै। काहूबिधिचितचयननआवै १५ दोहा॥ बिरहिनिअतिहि उदासह्वै राधाबैठीधाम। ललिताआईमिलनहित नवल नागरी बाम १६ ॥

आना ललितासखीका राधिकाजीके पास और जाना राधिका का उसके साथमें वनविहारको और मोहितहोना श्रीकृष्णजीका राधाके स्वरूप पर ॥

दोहा ॥ अर्द्धयाम दिन रहिगयो अथवनलाग्योभान। शीतलमन्दसुगन्धमय मारुतसरससुहान १ ऐसोसमय सुहावनो भरीमोदमनमान। ललिताअपनेधामसे चली गेहवृषभान २ श्रीराधाकेमहलमें तुरतहिपहुँचीजाय। बिहँसिबचनबोलीसखी कहुप्यारीकुशलाय ३ कैसीप्यारी अनमनी आजभईछबिहीन। कहुनागरियहचन्द्रमुखकैसे भयोमलीन ४ बोलीबचनबनायके राधामहाप्रवीन। भयोबिषमज्वररीसखी तासोंबदनमलीन ५ तुरतमिटैतन कीतपन शीतलहोवैअङ्ग। सोऔषधिलैआइयो अरीबीर चतुरङ्ग ६ सोरठ ॥ औषधिलावोहेर नवलनागरीभोरहीं। पीजोबड़ेसबेर यहिबेलानहिंगुणकरै ७ चौपाई॥ आजचलो बृन्दावनप्यारी। शोभालखिमनकरैंसुखारी ॥ ऋतुबसन्त सुखआनँदकारी। बृन्दाबनकीशोभान्यारी ॥ वसन्तऋतु का रूप वर्णन ॥ दोहा ॥ उमँगिअङ्गआनँदभरत शोभालखिशिवराज। ऐसीछबिबनबाटिका आवतहैंऋतुराज ८ सवैया ॥ बरबायु बुहारि रहेचितिको शुचिमारग-शोधि बनावतहैं। खसिशीतके बूंदन फूलनिसे मगमानोंगुलाबसिंचावतहैं॥ तजि डारप्रसूनगिरैं धरणी जमफूलकेफर्शबिछावतहैं। शिवराजकहैं ऋतुराजइतै अबराजसमाजसे आवतहैं ९ बहु फूलन शीश किरीटसजे नव पल्लव लाल दुशालगरे। सह फूललतालसडारनमें जनुमोतिनहार शिंगारगरे॥ द्रुमभूप केरूपसे राजतहैं छबि देखतही मनलेतहरे। शिवराजकहै

ऋतुराजकेरूप मनोद्रुमआज बनेसिगरे १० घनाक्षरी ॥ मो तिआगुलाबजूही केतकी निवारफूल चांदनीको फूल शोभा चन्दकीहरतहैं। सेवती किवार कचनार सहकारनार चम्पा कीसुबासउर आनँदभरतहैं॥ श्यामताके नयनदेखि मयन कोनुराग होत दाड़िम जो हाससंग पवनके करतहैं। ऐसी छबिसाज शिवराज बनकुंजनमें मानोंऋतुराज आजप्रकट फिरतहैं ११ सवैया॥ चहुँओरनचारि कियारिबनी द्रुमपंक्ति नपंक्ति अनेकघनेहैं। फलफूलअनेकनरंगलसैं सरशोभित रत्नसोपानबनेहैं॥ कहिं चातक मोर चकोर मधूकर बोलत प्रेमके रंगसनेहैं। शिवराजकहै तेहिऔसरकोसुख आनँद काहुनजातगनेहैं १२ दोहा॥ ललिता यों बोलीबचन प्यारी बनमें जाय। ऋतु बसन्त छबि देखिकै आवैं मन बहलाय १३ उठी लाड़िली बेगही चली सखीके संग। ऋतुबसन्त देखन चली बिपिन बाटिकारंग १४ सोरठा॥ देखि बिपिन ऋतुराज कहत राधिका मनहिंमन। मनो मदन दलसाज आयोमोहिं मारन निमित १५ चौपाई॥ इतलाड़िली सखिन संग डोलै। उतनटवरबरफिरतअकेलै॥ पड़ेनयनराधापै जाई। यकटकरहे निहारिकन्हाई॥ कमल नयन यहिभांति प्रकासे। कुमुदफूल जिमि चन्द्र प्रभासे॥ बिहँसि बिहँसि अतिफूलनलाग्यो। तिमिप्रियलखिप्रीतमअनुराग्यो १६ दोहा॥ परीचितवनि दृगश्याम को अरुण अधर पुटमाहिं। जैसेफूल गुलाबपै मधुकरकी परछाहिं १७ राधाछबि ल खि इमिछके नवल नागरे श्याम। भूलिगंई नँदलाल को सुधि आवनकी धाम १८ चौपाई॥ मोहनमनमें कहत विचा री। यह कन्या कोइ देवकुमारी॥ वरुण इन्द्र या नागदुल

री। यह नहिं मानुषकी अनुहारी ॥ सखी संग बन देखत डोलै। कौनीमिसु यासन कोबोलै ॥ संगनारि अरु कुमरिल जोरी। किमि जावों ढिग नवलकिशोरी ॥ याके बिछुरत किमि ज़ियराखों। निजउरब्यथा काहिसन भाखों ॥ इतनी सुधि जो पावों याकी। है यह सुन्दरि कौनि कहांकी ॥ लोक लाज कुलकानि बिसारों। या संगप्रीति अवशिमैंसारों ॥ ऐसीशोचि रहेघनश्यामा। राधाचलीआपनेधामा ॥ दोहा ॥ जबनहिंदेख्यो लाड़िली ब्याकुल बारिजनयन। सुभग श्याम मानोंभयो मणिबिनुब्यालअचैन १९ संध्यासमय बिचारिकै श्रीराधाअरुश्यांम। मिलनआश मनराखिकै गमने निजनिज धाम २० जासुनाममायापती सकलज गतसेन्यार। मायाभावदेखावते नरतनधरिकरतार २१ ॥

जाना राधिकाका गौदुहावने बृन्दाबनको और भेंटहोनी अचानक बृन्दाबनबिहारीसे और दुहना गौओं का गोपालजीका और प्रकट करना अनुरागका परस्परमें॥

दोहा ॥ गगनसिंहासन प्रातही राज्यो नरपतिभानु। निजनिजकारजकरनलगि आज्ञाकियोसुजानु १ लोचन कमलबिकासिकै देख्योगगनप्रकास २ उठीलाड़िलीसेज से गईमातुकेपास ३ करिप्रणामकह लाड़िली सुंदरिगिरा स्वहाय। मातुदोहिनी दीजिये लावोंधेनुदुहाय। ३ उर लगायमुखचुम्बिकै मातुकह्यो समभाय। मैंकोइसखीप ठाइहौं तूबनको नहिंजाय ४ सोरठ ॥ मातुमोहिंदेजान बेगि लौटिघर आइहौं। मोहिं तिहारीआन अधिकबारनहिंलाइ हौं ५ चौपाई ॥ तबबोली बृषभानकिरानी। प्यारीबात तेरी हममानी ॥ दूधदुहाइबेगहीआयो। अधिकबारबनमेंनहिं

लायो ६ सोरठ॥ लईदोहनीहाथ राधा खरिकाकोचली।
लियोकाहुनहिंसाथ श्याममिलनकी आशहिय ७ दोहा॥
बंशीबटतटपटमहा लताबिटपकीछाहिं। राधेखड़ीनिहा
रती चारिदिशाचहुँपाहिं ८ सोरठ॥ बरसानेकोग्वालतेहि
औसरकोइनारह्यो। मनहिंबिचारतिबाल कासोंधेनुदुहा
इये ९ बार्तिक भाषा श्रीकृष्ण स्वरूप वर्णन॥ राधिका खड़ीहुई इस
बातको शोचती थी कि यदि कोई ग्वाल बरसानेका आ
जाता तो मेरी गायें दुह देता इस मनोरथ से चारों दिशा
निहारतीथी कि अचानक बृन्दाबनबिहारी से चारदृष्टि
होगई अर्थात् क्या देखती है कि श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द-
कन्द मोरमुकुटराजे अंगअंग पर भूषण साजे केसरका
तिलक भालपर सारे काननमें करनफूल धारे मानों द्वैज
चन्द्रढिग भानु उजियारे तापर कुण्डलकी चमक सूर्य्यके
गिर्द मानों रविमण्डलकी दमकथी बैजयन्तीमाल गरे
त्रिभुवनकी शोभा अंग २ में धरे उर भुजबिशाल अधर
मनोहर लाल चारु चिबुक गोल नासिका मणि अनमोल
चन्द्रमुखकमलनयन शोभा अरुसुषमाके अयन पीताम्बर
पहिरे रेशमी उपरना ओढ़े तापहारनी चितवनि बनाये
बांसुरी अधरसे लगाये अतिअनुराग हिये त्रिभंगीछबि
किये मधुर मधुर स्वरोंसे मीठी मीठी तान गाते भौंहन
के सयनसे भाव बताते मन्दमन्द मुसकराते बंशीबट से
चले आते हैं॥ सवैया॥ श्रुतिकुंडल शीशकिरीटलसैपटपी
तमहाछबिसोहतहैं। गरमेंमुक्तानकेमालनहीं मनुप्रेमके
तारन पोहतहैं॥ भृकुटीबरबङ्कबिशालभुजामृगबालखड़े
दृगजोहतहैं। शिवराजकहैयदुराजखड़ेमँदमंदहसैंमनमो

हतहैं १० घनाक्षरी॥ केसर तिलकभालगरेबयजयन्तीमाल कुण्डलकिरीटशोभाकोटिनमदनसे। सुंदरकपोलनासामणिअनमोलसोहै मानोदानादाबो सुआदाड़िमदशनसे॥ प्रेमरंगराते बंशीअधरलगातेमीठीमीठीतानगाते आते माधोमधुबनसे। मांगतशिवराज बरयाहियदुराजदीजैतेरो रूपध्यानन हींजायछिनमनसे ११ दोहा॥ देखिछटाछबि श्यामकी इकटकरहीनिहार। लाजसकुचमनसेगयो सकी दृष्टिनहिंटार १२ मदनमनोरथकहतहै गहिभुजकंठलगाव। लाजमिलननहिंदेतहै कैसोकरोंउपाव १३ अंगअंग कांपनलग्यो भइनागरिमतिभोर। थांभिकरेजाराधिका गईबैठि तेहिठौर १४ वार्त्तिक भाषा॥ इधर तो राधिका की यहदशाथी किमीन बिननीरकीभांति तड़पतीथी और उधर मुरलीमनोहरकी यह दशा हुई कि जैसे राधिका के चन्द्रमुख पर जोकि साक्षात् लक्ष्मीजी का अवतार थीं अचानक बृन्दाबनबिहारीकी दृष्टिपड़ी तैसेही चकोर की भांति उस चन्द्रमुखकी शोभा देखनेलगे और जैसे चकोर चन्द्रमाके देखने के समय पलक नहीं मारता वैसे ही कमलनयनकी टकटकी बँधगई और मनहींमन राधिकाकी प्रशंसा करनेलगे कि इस चितवन चालकी तो कोई देवबालभी न होगी इसका स्वरूप तो ठीक ठीक लक्ष्मीजीके रूपके अनुरूपहै कदाचित् यह मनहरणी चन्द्रमुखी मृगनयनी कमला का अवतारहोवै॥ श्रीराधिकाजीका स्वरूप वर्णन॥ सवैयां॥ सुकुमारीसुहंसकिचालचलै मृगलोचनमानोंगुलाबकेप्याले। अलकैंबिथरानीकपोलनपैअमिहेतुमयङ्कलसैंजनुब्याले॥ द्युतिदन्तकिदामिनि देखिलजै

अधराधरलालहुसेअतिलाले । शिवराजमहाछबि देखि छकेब्रजराजपड़ेअनुरागकेजाले १५ इकतो दिंनथोरेकि चन्द्रमुखीतापै मोतिनहारशिंगार कियो है। छबिदेखत वाहिकेहाथबिक्यो मानोरूपकेदामन मोललियो है॥ तेहिके गुनरूपछटाछबिकीउपमाजगमें कबिकौनदियोहै। शिवराजकहैसोई सुन्दरिसेकछुकाम त्रियाछबि मांगिलियो है १६ घनाक्षरी॥ दन्तपंक्तिदेखिउर दाड़िमदरकिजात दृग श्यामताईदेखिश्यामतालजन्तभो। अधरनिकाई चिकनाईअरुणाईदेखिसुमनगुलाबनिजडारसेतजन्तभो॥केशकी लहरलखिनागिनज़हरखात नासिकाबिलोकि तिलफूल कुम्भिलन्तभो। श्रवणशिवराजछबिछोरैबिधुबालआजल खतकपोलगोलचंदद्युतिमन्दभो १७ दोहा॥ यद्यपिउपमाचंद्रसेदेतबहुतकबिलोग। परशशिमुखभांईलसैकिमिराधा मुखयोग १८ वार्त्तिकभाषा॥ ऐसे मनहींमन प्रशंसा करते हुये बृन्दाबनबिहारी कहनेलगे कि किस भांति इसचन्द्र-मुखीके निकटजावों और किस मिष अपने अन्तःकरण कीपीर इसको सुनावों और हृदयकीप्रीति प्रकट जनावों क्या जानिये कैसा स्वभावहो कदाचित् रसरीतिकी बातों से क्रोधित न होजाय और मेरे हाथ न आये फिर मुझसे क्या बनिआये परंन्तु बिना कहेभी तो नहीं बनता बिना कहे अपने मनकी बात कोई क्या जानैगा कि इसको किस वस्तुकी आवश्यकता है क्या करें इससमय मान और अपमान पर दृष्टि करना अच्छा नहींहै नहीं तो कार्य सिद्ध न होगा और अपना प्राण तो मीन बिन नीर की भांति बिनामिले उस चन्द्रमुखी के इस तप्त हृदय में

तड़प रहाहै॥ चौपाई॥ हृदयकहत निजहृदयलगाऊं। मन चाहत निजव्यथा सुनाऊं। लोचन ललचतहैं दरशनको। रसना अधर अमी पीवनको॥ वार्त्तिक भाषा॥ ऐसा विचारकर श्यामसुन्दर अच्छा अवसर जान मनमें ढिठाई ठान डरते कांपते श्यामा के पास जाकर बोले कि अय प्यारी! तुम अतिहि सुन्दरी व सुकुमारी किसकी कुमारी हो जो इस बंशीबट अटपट महाभयावने ठौर ऐसे रूप शृंगार से अकेली खड़ीहो और किसकी बाट देखतीहो जिसके आसरे तुम यहां खड़ीहो उससे तुम्हारा क्या कामहै कदाचित् वह कार्य्य मेरे करनेके योग्य होवै तो मुझको आज्ञा दो मैं उस कार्य्य को करलाऊं जब बृन्दाबनबिहारीने यह प्रीतिभरी हुई बातें बृषभानुकुमारी को सुनाईं तब तो राधिकाके भी हृदयमें सनेहकी नदी उमड़ आई और श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द को अपने स्वरूप पर मोहित जान और उनके मनकी लगन पहिचान प्रथम तो आनन्द के मारे अचेत होगई परन्तु कुछ काल पीछे सचेत होकर कहनेलगी कि धन्य रे मेरा भाग! कि जिस भांति इनके नयनके बाणोंने मेरे हृदय को बेधा है उसी प्रकार मेरे रूपकी गांसी से इनका भी हृदय घायल दिखलाई देताहै ऐसा समझकर बारंबार प्रेमके समुद्र में मग्न होकर बिरहकी लहर में पड़कर अचेत होगई परन्तु फिर आशारूपी किनारे के सहारे से अवकाश पाकर महाआनन्द में पगी और मनहीमन बृन्दादेवी को म- नाने लगी॥

स्तुति करनी श्रीराधाजी को बृन्दादेवी से
श्यामसुन्दरके मिलने निमित्त ॥

चौपाई॥ अयजगदम्बाजगतकारिणी। सिरजनिपालनि हरनि हारिणी॥ ब्रह्मा बिष्णु शंभु मनमाहीं। राखत तेरो ध्यान सदाहीं॥ तुमसब दैत्य सँहारन कीन्हे। अभयराज देवनको दीन्हे॥ इन्द्रआदि सुर तवगुणगावैं। मनकामना अभयबरपावैं॥ सर्बमयी सबसृष्टि ब्यापिनी। आदिशक्ति संसारदापिनी॥ तेरो गुण को कहै बखानी। जाकी महिमा बेद न जानी। चारियुगन त्रयकालकि ज्ञाता। ममउरकी भलिजानो माता॥ मैं तव कमल चरणकी चेरी। मातुहरो ममपीर घनेरी॥ यद्यपि मन्द मनोरथ मोरा। तेहि न लखो निरखो निजओरा॥ मातु मनोरथ जो मैं पाऊं। जन्मअंत तुम्हरो गुणगाऊं॥ दोहा॥ गुण औगुण नहिं देखिये जानि निपटलघुबाल। आदिशक्ति जगदंबिकाहूजैमातुदयाल १

वार्त्तिक भाषा॥ और मनमें कहने लगी कि हे अम्बिका माता! जिस दिन श्यामसुन्दर मेरा करगहैंगे और मुझे अपनी चेरी कहैंगे और मैं अपनी कामना पाऊंगी उस दिन तुम्हारे कमल चरणों को पूज रोली अक्षत पुष्प चढ़ाय तुम्हारा गुण गाऊंगी इसभांति देवी को मनाय बिनती करि शिरनाय हाथबांधि मौनसाधि रही और श्यामसुन्दरकी बातोंका कुछ उत्तर न दिया तब तो श्यामसुन्दरने फिर प्रीतिभरे बचन सुनाये॥ चौपाई॥ तब बोले त्रिभुवन पति नागर। कोटिकाम छविधाम उजागर॥ प्यारी चितै इतै अब हेरो। सुनियो बयन नयन टुक फेरो॥ तजोलाज चितवोमृगनयनी। बोलोबयनकोकिलाबयनी॥ कक्के

तवढिगखड़ेपुकारत। तुमनहिंहमरीओरनिहारत॥ ऐसी मनआईनिठुराई। कैसीतुम्हैंमौनताभाई॥ प्यारीरूपगर्ब मतिकीजो। बोलो बयनउतरटुकदीजो॥ को पितुमातु कहांतवगेहा। नागरिकेहिके भिनीसनेहा॥ तुमसे द्रव्य कछूनहिंमँगिहैं। बोलनमेंकछुदामनलगिहैं॥ छीनिलियो मनकियोठगौरी। अबकैसीबैठीबनिबौरी॥ बनबनफि रतकरतमनचोरी। तापरऐसीबनीलजोरी॥ दोहा॥ चितचोरी मेंलाजनहिं बोलनमेंबड़िलाज। जोइतनीलज्जाहती तोब ननेंक्याकाज २ चौपाई॥ यहबिद्यातुमकासोंसीखी। गांसी नयनबनाईतीखी॥ जेहिउरलागैसोनहिंजीवै। चाहेमूरिस जीवनपीवै॥ इनबातनरिसक्रियोनप्यारी। जानिहमैंनिज आज्ञाकारी॥ यहीधर्मपूरुषकोअहई। राजनीतिनिगमा गमकहई॥ काहूकोसङ्कटमेंदेखै। बलअनुमानसदाहित लेखै॥ देखितुम्हैंअतिशयसुकुमारी। यहबनसघनभया वनभारी॥ निजमनजानिधर्मपुरुषारथ। आयेसुन्दरितुम्ह रेस्वारथ॥ अपनाधर्मरहासौकीन्हा। दोषपापसेछुट्टीली न्हा॥ नारिस्वभावसांचश्रुतिलेखा। जैसासुनासोआंखिन देखा॥ अबतुमजानो अरुतुमकामा। नागरि हमजाते निजधामा॥ धनिपितुमातुगुरूपरबीना। जिनतुमकोऐसी सिखदीना॥ अन्तसमय प्यारीं पछितैहो। मौनब्रतका तुमफलपैहो॥ सवैया॥ टुकघूँघटखोलिइतैचितवोअबलाज सँकोचकहांलैमनैहो। अनुरागउड़ैतुमनयननसे यहप्रेम कीदृष्टिकहांलैदुरैहो॥ रसचाहौतोमानगुमानतजो नहिं लाजकेकाजमहादुखपैहो। शिवराजकहैलगिजावोगरे नहिंअन्तसमयमनमेंपछितैहो ३ दोहा॥ जातआपनेधाम

को मनजनिकियोमलान। कहीसुनीकीजोक्षमा जानि निपटअज्ञान ४ प्रीतमको सुनिकैवचन प्यारीमनअकुलान। चितठैकैचितचोरअब चाहतहैघरजान ५ कहतधामकोजानको सुंदरश्यामसुजान। ताकेबिछुरतकिमिजियों जाकेकरमसप्रान ६ वार्त्तिकभाषा। वचन राधाका कृष्णजीसे॥ जब राधिकाने जाना कि प्रियतम मेरा प्राणलेकर अपने घर को सिधारा चाहते हैं कदाचित् मुझे फिर न बोलावैं और अभिमानी जानकर मुझसे मान करजावैं और फिर यहां न आवैं इनको तो मुझसी सुन्दरियां बहुत मिल जावैंगी परन्तु हम इनको न पावैंगी निदान मीन बिननीरकी भांति तड़प तड़पकर मरजावैंगीं ऐसा बिचार ठान त्यागि सभी कुलकान लाज संकोच छोड़ घूँघटका मुखमोड़ श्यामसुन्दरकीओर निहार नयननके द्वाररूप रस पीने लगी और अटपटे बयन दृगोंके सयन लगावकी बातें अपनी घातें करबोली कि आहदयी जो मैं जानती कि बंशीबट ऐसो अटपट ठौरहै कि जहां ठग और चोर लागते हैं और धन तो क्या बस्तुहै बरन मनको चोराते हैं तो मैं काहेको गौदुहावने आती और इसआपदाके बोझे को अपनें शिरपर उठाती और अपना जीव गँवाती आह इस दूधके कारण आज मेरा छट्ठीका दूध निकल गया यह कहकर माथमें हाथ देकर बहुत पछिताई और आंखोंमें प्रेमके आंसू भरलाई फिर बोली कदाचित् बिधनाने मेरे भाग्यमें यही लिखाहोगा इसमें किसी दूसरे मनुष्यका क्या दोषहै आज मेरे गांवका कोई ग्वालहोता तो गायें दुहाकर अपने घरको कब न जाती यहां इतनी

बार क्यों लगाती और इसदुःखके जाल में पड़कर क्यों पछताती जबकि राधिका ऐसी निराली निराली अनुरागउपजाने और प्रेमबढ़ानेवाली बातें कहकर चुपकी हो रही तब तो मुरलीमनोहर मनमें ढिठाई ठान चित्तमें चतुराई आनकर बोले॥ कृष्णकावचनराधिकासे॥ बस बस अब चतुराई जानेदो चेतमें आवो ज्ञानकी लो टुक होठों को सम्हालो जिह्वा मुखसे बाहर मत निकालो अरेवाह लली धन्यहो क्यों न हो यह अवस्था और यहगुण सचहैं स्त्रियों की मायावरी व चेष्टासे बचना बहुतकठिनहै हमने जैसा त्रियाचरित्र कानोंसे सुनाथा वैसा आज अपनी आंखों से देखा सो यह तो सब तुंम्हारी चतुराई की बातें और तुम्हारे ज्ञानकी उपमाहै अब यह बतावो कि भला हमने तुम्हारा क्या चोरालियाहै जो चोर चाण्डाल बनातीहो और झूठा कलंक लगातीहो जैसे तुम अपने चंचल दृगों से मनको चोरातीहो वैसेही औरोंको जानकर झूठीचोरी लगातीहो ये बातें प्रीतिकी घातें सुनकर राधिका ने आंखें चोराली और मुखसे न बयन किया परंतु दोहनी मुरलीमनोहरके आगे धरकर गौदोहनेका सयन किया॥ चौपाई॥ गौवनदुहतलगतप्रभुकैसे। सोछबिलेखौंशोभित जैसे॥ श्यामागौअरुश्यामबिहारी। जसघनश्यामनिशा अँधियारी॥ सोढिगशोभितगोपकुमारी। तड़ितश्याम घनअरुनिशिकारी॥ क्षीरधारबरसैजनुपानी। युगलप्रेम कृषीहरिआनी ७ सोरठा॥ दोहिदूधब्रजराज फिरफिरप्यारीसोंकहत। कागुनमनिहौआज यतोकार्य्यतुम्हरोकियो ८ बार्तिकभाषा॥ तब राधिका मनमें कहनेलगी कि अब

इनसे लाज सकोच छोड़कर बोलना चाहिये अब इनकी बातोंका उत्तर देकर आनंद लेना चाहिये अब चंतुराई व निठुराई और नारिचरित्र व त्रिया हठकरने में इनको दुःखहोगा और जब मेरेप्रियतमको दुःखहुआ तोमुझेकब सुख मिलेगा कारण यह कि मैं इनको अपना प्राणपति जानचुकीहौं और अपने मनमें निश्चय करिकै इनसे सच्ची प्रीति ठानचुकीहौं कदाचित् जो मुझको ग्रहण न करैंगे और मेरी प्रीति अपने मनसे हरैंगे तो मैं उनके बिरह में बिषखाय मरजावोंगी और अपने हृदय की सच्ची प्रीति प्रकट करि देखलावोंगी मुझे अब दूसरे पुरुष से क्या काम है मेरे तो उरमें श्यामसुंदर का धाम है जैसा दृष्टांतमें लिखा जाता है सवैया ॥ स्वातीकोबुंदमिलैतो मिलैनहिंचातकगंगकोपानिनपीहै । यातोमिलैमुक्तानि मिलैनहिंहंससजीवनमूलनखैहै ॥ भानुदहैतोदहैचहैपंक जबारिजचित्तनचंद्रकोदैहै । दीपकज्योतिपतंगदहैशिवरा जकहैअनुरागयहैहै ६ बार्तिकभाषा ॥ इतनी बात बिचारि श्रीकृष्णचंद्र आनंदकंद की ओर निहारि आंखों में प्रेमका जलभरि लाई तब तो श्यामसुंदर के हृदय में भी करुणाकी नदी उमड़आई और राधिका के पूर्ब जन्म की सुधि करिकै कंमलनंयन भी सजलहोगये तब तो राधिका अच्छा औसर जानि मनमें ढिठाई ठानकर बोली कि मैं अबला अनाथ बेकन्थकी कामिनी और तुम जगत्कारण करण जगन्नाथ त्रिभुवनधनी मैं तुम्हारे क्या गुन मानने के योग्यहूँ जो कहतेहो कि क्या गुनमानोंगी मेरा तो प्राण तुम्हारे साथहै और जीवन तुम्हारे हाथहै जब से

आपका चरणकमल छोड़कर क्षीरसागरसे आईहूँ तब से आपके बिरह बियोगमें क्या क्या न व्यथा उठाई हूँ अब वह कौनसा दिन होगा कि तुम्हारे कमल चरणों को अपने हृदयमें लगाकर पलूटोंगी और त्रिभुवनकी सुषमा लूटोंगी ऐसे बचन सुनतेही श्यामसुन्दर अपने केशवरूपका स्मरणकर प्रेमके सागरमें डूबगये और राधा को रमाका अवतार जान अतिही सुखमान हाथ पकर अत्यन्त राव चावकर भूमिसे उठाय पीताम्बरसे आंसू पोंछ निज हृदयमें लगाय गोदमें बैठायलिया और प्रीति की रीतिकी बातें प्यारीको सुनाने लगे जब लाड़िली ने अपनेको त्रिभुवनपतिकी गोदमें देखा तो आनंदकी बहुतासे बावलोंकेसमान बोलउठी कि अरी यह सुखसत्य सत्य मुझे प्राप्त हुआहै कि स्वपनेकी सम्पदा है ऐसा बिचारकर मारे आनन्दके पुलकाङ्ग होगई अब मेरी बुद्धि का घोड़ा इस बिचारके मैदानमें दौड़ते दौड़ते थककर अचार होगयाहै परन्तु इस अनन्तभूमिका अन्त न पाया अर्थात् मैं यह नहीं लिखसक्ता कि उस समय राधिका को कितना सुखहुआथा कि जिससमय अचानक अपने प्रेमकेपात्र अनुराग अर्थात् श्यामसुंदरके गोदमेंअपनेको बैठी देखाथा। इस रसके स्वादको कुछ वही रसिक लोग जानते हैं जिन्हों ने इस अनुरागरूपी रसको पीकर जगत्का छओंरस अर्थात् मीठा—खट्टा—खारा—तीखा—कड़ुवा—कसैला फीका समझा है जब बृन्दाबनबिहारी ने प्यारीको अपने अनुरागके सागर में मग्नदेखा और अचेत पाया तो निजमायाको बटोरकर कृपादृष्टिसे देख

प्यारीको सचेत करदिया और कहा कि तुम बड़ी देरकी आईहो, अपने घरको जाओ नहीं तो तुम्हारे माता पिता दुःख पावेंगे और बिना देखे तुम्हारे घबड़ायेंगे तो तुमको बहुत रिसायेंगे ऐसा कहिकर भोरहीं मिलनकी आशा देकर प्यारीको बिदाकर श्यामसुन्दर अपने स्थानको चलेआये और राधिका घरमें जाके प्रीतिको हृदयमें दुराके घरके कार्योंमें इसभांति प्रवृत्त हुई कि यह भेद किसी पर प्रकट न हुआ परन्तु मनमें श्यामसुन्दरके स्वरूपका ध्यानकर कहती थी कि आजका दिन व रात्रि बीतकर कब भोरहोवे कि मेरी आंखोंके आगे वह चितचोर होवै दोहा॥ सोदिनब्रह्माकोभयो महाप्रलयकीरात। प्रीतमबिरहबियोगमें यकपलयुगसमजात ७ प्रातभयो शोभितमहा उदितभानुआकास। फूल्योकमलसरोवरे सुंदरअमलसुबास ८ सुखदगिरामनभावनी पक्षीरङ्गबरङ्ग। द्रुमद्रुमडारनलसतहैं बृंदावनबहुरङ्ग ९ शोभालखिबन सघनकीमनमनोजउपजन्त। मानोंअतनसुतनधरे बृन्दाबनबिचरन्त १० घनाक्षरी॥ चात्रिकचकोरशुकसारिका करतरोर मानोआजबाजरहीदुंदुभीमदनकी। गुंजतमलिंदमातेंफूलेफूलेफूलनपैआयोसुधिदयनमानोंमयनकेअवनकी॥ बाटिकासिघनंफलफूलरसरंगनमें जहांदेखोतहां छबिरतिकेरमनकी। कहतशिवराजमानोमारनेकेकाज आजआयोकामराजसेनासाजसुमननकी ११ दोहा॥ ऐसी समयस्वहावनीफूलीविपिनरसाल। राधाआईमिलनहितरतिनागरनंदलाल १२ नवलबाटिकाद्रुमलता बृन्दाबनचहुंओर। संगसखनकेविहरतेनागरनवलकिशोर १३
इतिअनुरागलतिकानामकग्रंथेराधाकृष्णअनुरागस्यादिवर्णनोनामतृतीयःसर्गः॥

देखना राधिकाका बनमें जाकर तीसरीबार छबि श्यामसुन्दरकी सखनके संगमें फिरतेहुये और लौटआना अपने स्थानपर मिलने की आशा से निराशहोकर व पड़ना शय्यापर मन हरन प्यारेकी बिरह की ब्यथासे ब्याकुल होकर और आंवना चंद्रावली सखी का और पूछना राधिका के बृत्तान्त का॥

बार्तिकभाषा॥ जब कि राधिकाने बृन्दावनबिहारी को सखन के संगमें देखा और औसर उसको उस समय श्यामसुंदर से मिलने का न मिला और बड़ी देर तक मोहनी मूर्ति सांवली सूर्तिकी शोभा देखती रही और श्यामसुंदर भी साथियों की लाज मानकर दूरही से उस चंद्रमुखी अमृत की नयन चकोर को चखते रहे और राधिका के निकट न आसके तब तो राधा महाउदास होकर अपने धाम को चलीआई और मुरलीमनोहरके स्वरूप का ध्यान कर बिरह की ब्यथा से ब्याकुल होकर शय्या पर जा पड़ी और बिचार करने लगी कि पुरुष मात्र की जाति बड़ी निर्दयी होती है देखो मैं इतनी देर चकोर की भांति टकटकी बांधि उनका चंद्रमुख निरखती रही और यक पल पलक न दी परंतु उन्होंने मेरी कुछ सुधि न ली बास्तवमें पुरुषमात्र की भौंरेकीसी प्रकृति होतीहै कि कभी इस फूलपर बैठे कभी उस कली का रस लिया किसी फूलकी पंखड़ी काटडाली किसी कली का रस चूसकर बेरंगकरदिया फिर जिसका रस लिया उस पर से तुरंत उड़गये और फिर कभी उसकी ओर दृष्टि तक न दिया भला मैंतो अबला बेबशथी कैसे

उनके पास जाती परंतु वो जो चाहते तो सखोंसे छिपकर अवश्य मेरे पास आते और अपनी तापहारनीं चितवन से मेरे हृदयकी तपन मिटांते कदाचित् मुझे कुरूपजानकर मेरे निकट नहीं आये पर इसमें उनका क्या दोष है यह सब मेरी कुरूपता का कारण है मन चंचल पर किसी का बश नहीं चलता श्यामसुंदर क्या करैं जबकि उनका चित्त मेरे रूपको स्वीकार नहीं करता तो वै हठकर मुझसे क्योंकर प्रीति करैंगे हां कल जो इतनी प्रीतिकी रीति दिखलाईथी सो केवल मुखही से बात बनाईथी कुछ मेरी प्रीति उनके हृदयमें न संमाई थी हां मुझे अपने बिरहसागर में डूबती हुई देखकर कपट की राह मेरी बांह पकड़ केवल अपना प्राण छोड़ाने को मेरा सन्मान करदिया था यदि मेरी सच्ची प्रीति उनके मनमें होती तो बंशीबटमें मुझे अकेली छोड़ मेरीओर से मुखमोड़ अपने घरकी ओर क्यों पधारते पर बिधि से क्या बशाय होनहार कौन मेटनहार है पर अब मुझे इस निर्लज्जताका जीवन नहीं स्वीकार है न जानिये कि मुझमें क्या औगुन विचार किया जो मुझे तजदिया अब मैं इसलाज के मारे जंहर बिषखाय मरजाओंगी और संसारमें अपना मुख न देखाओंगी राधिका शय्या पर पड़ी मनमें अनेक भांतिकी कल्पना कर श्रीकृष्णके बिरह सागर में डूब रहीथी कि चन्द्रावली अपने मन्दिर से राधिका से मिलने को चली आवना चन्द्रावली सखीका राधाके पास और परीक्षालेना उसके अनुरागकी दोहा॥ चतुरिसखीचन्द्रावलीराधासेबड़िरीति। प्यारीसोंमिलनेचली ठानिहृदयमेंप्रीति १४ गईराधिका

धाममें अतिहितसोंचितचाय। देखिलाड़िलीकीदशा रही सखीमुर्छाय १५ सोरठा॥ बोलीवचनसप्रेम देखिराधिका कीदशा। कहौकुशलअरुछेम प्यारीकैसीअनमनी १६ नहिंबोलतकछुबैन चन्द्रावलिपूंछतखड़ी। ब्याकुलमहा अचैन शिथिलगातकम्पितहिया १७ हरिगीतिकाछन्द॥ सब अशनवशन सिंगारभूषन त्यागिअति मनदीनभो। जस भानुमण्डलशशिबिराजत चन्द्रबदनमलीनभो॥ सूखेअ धरलोचनसजलभो ज्ञानगुनसुखमाहरी। श्रीकृष्णबिरह बियोगसागरराधिकाबूड़ैपरी १८ वार्त्तिकभाषा॥ जबकि चंद्रावलीने राधिका को कईबार पुकारा और वह श्रीकृष्णजी के ध्यान में मग्न होने के कारण उसकी बातों का कुछ उत्तर न दिया तब चन्द्रावलीने राधिका का शिर उठाकर अपने गोदमें रख शिर वो छाती से हाथ देकर नाड़ी नाड़ीकी परीक्षा लेकर राधिकाके अङ्ग अङ्गमें अनुराग का रोग और श्यामसुन्दर के बियोगकी पीर जानकर मनमें चतुराई आनकर बोली कि अरीबीर यह तेरी क्या दशाहुई लो अब तू बेमारे मुई भला तूने यह क्या किया कि शोक का पहाड़ अपने शिरपर उठाय लिया भला जो हुआ सो हुआ अब यह तो बतादे कि किसके वियोगका ज्वर तेरे शरीरमें है जो तू इतनी पीरमें है और यह क्या चलन तूने निकाला है कि मुखसे बोलने तक का लाला है टुक आंखें खोलो तो वो मुखसे बोलो तो भई तुझे मेरीसों तू सांची बतादे तुझे किसीका बियोग है या तेरे शरीरमें कुछ रोग है तब तो राधिकाने आंखें खोल दीं और अपना शिर चन्द्रावलीके गोदमें देखतेही श्रीकृ-

षणचंद आनंदकंदके गोदमें बैठने की याद आगई और श्यामसुन्दरके ध्यानमें इतना रोई कि रोते रोते हिचकी बँधगई तब चन्द्रावली अतिही बिनतीकर बोली कि अरी प्यारी मैं तुमपर वारी अरी सांची बतलादो आज़ इतना क्यों रोती हो और गुलाब का फूलसा मुखड़ा गरम गरम आंसुओं से धोती हो तब तो राधिका आंखें बदल रुखाई मार चतुराईकी राह लाज को सम्हार कहनेलगी कि मैं कल्ही से शय्यापर ब्याकुल पड़ीहूं बिषम ज्वर से शरीर मेरा जल रहा है महा अधीर पीर से भरीहूं परन्तु तूने मेरी कुछ सुधि न ली और न कोई ओषधीदी बुरे दिनोंमें कौन किसका मित्र होताहै इस मायारूपी संसार में मनुष्य केवल अपने प्रयोजनका हितहै चन्द्रावली हँस के बोली हां हां बहिन सच कहतीहो बास्तवमें यही बात है मनुष्य तो क्या बरन देवता देवी इत्यादि जीवमात्र सब स्वार्थहीकी प्रीति करते हैं बीर मुझे तेरे शिरकी सौंह मुझे इसबातकी सुधि कल न मिलीथी कि तुझे कुछ पीर गम्भीरहै और तू कलसे बिकल और अधीरहै जो मैं तेरी दशा ऐसी जानती तो किसी के बरजनेपरभी न मानती ईस कार्य्य बिहाती पर तेरे पास अवश्य आती लो अब अपराध क्षमा कीजो टुक दृष्टि इधर दीजो बहुत बातें न बनाओ चतुराई छोड़दो सच सच बताओ कि किसके नयनके बानोंसे घायल हुईहो उस बैदको ढूँढ़लाऊँ कि तुम्हारी ओषधीकर तुमको चङ्गीकरे और तुम्हारे अन्तरकी पीर हरे यह सुनकर राधिका चितमें बहुत लजानी और मनमें बड़ी संकुच मानी और प्रीति छिपाकर

सखी से रिसाकर रुखाई बदल नासिका सिकोड़ भौंह मड़ोड़ तिरछे नयन तीखे बयन बोली अरी बावरी आज तुझे क्या हुआहै कैसा नयनका बान और कौनसा बैद वो गुनवान तूने कुछ भांग तो नहीं खाई है जो ऐसी बौराई है क्या किसीसे हँसने नहीं पाई है जो मेरी हँसी कर मुझे रोवाने आई है चलो हटो ऐसी हँसी मुझे नहीं भाती है और ठठोली मुझे नहीं सोहाती है तुम्हीं ऐसी होती हैं जो पानी में आग लगादेती हैं भला तूने कलङ्क लगाया तो लगाया देखना किसी औरके सामने ऐसी हँसी मुख पर न लाइयो नहीं तो मेरे मस्तक पर कलङ्कका टीका लगाइयो यह सुनकर चन्द्रावली बोली अजी बैठोभी बहुत चतुराई अच्छी नहींहोती अनुराग वो स्नेहभी कहीं छिपायेसे छिपताहै वह तो सुगन्धसारकी भाँति पलमात्र में प्रकट होजाताहै अरी बाहरी लली तुमने कैसी सूरत भली बनालीहै टुक दरपन लेकर मुखड़ा तो देखो प्रातःकालके भानु वो हरदी के रङ्गकेसमान पीला और होठों का रङ्ग नीला होकर मुखपर अनुराग बरसता है और आंखों से स्नेहका रङ्ग टपकता है मुख पीलाहै अधर नीलाहै आंखोंमें जल छारहाहै ओंठ कुम्भिला रहाहै ठण्ढी सांसै लेतीहो मनका भेद नहीं देतीहो मैंने तो अपनी सखी जानकर तुम्हारा वृत्तान्त पूछाथा परन्तु तुम क्रोधवन्त होतीहो मुझसे बड़ी चूकहुई जो मैंने ऐसी चर्चाकी अब मेरा अपराध क्षमा करना परन्तु इतना कहे जातीहूँ कि अभीसे अनुरागके जालमें न पड़ना नहीं तो दुःखके सिवाय सुख न पाओगी मैंने अपनी मित्रता जता

दी आगे तुम जानो और तुम्हारा काम मैं जातीहूँ अपने धाम जो जैसा करैगा वह वैसा पावैगा मेरा इसमें क्या जावैगा। जब ऐसी रूखी सूखी सुनाकर चन्द्रावली अपने स्थानको चली तब राधिकाने चन्द्रावलीको रूठीहुईजान और चित्त उसका उदास पहिचान कर बिचारने लगी कि आखिर तो यह छतीसी मेरे भेदको जानचुकी मेरे छिपानेसे क्या होताहै जो मैं निजमुखसे न कहोंगी तो यह मुझसे बड़ा खेदमानैगी और मुझसे मानकर जा- येगी तो सखियोंमें मेरा भेद फैलायेगी और यह मेरी परम मित्र सखी है इसके रिसाने सें मेरी बड़ी हानि होगी ब- रन मेरे चित्तको गलानि ऐसा बिचारकर राधिकाने चन्द्रा- वलीका हाथ पकड़ बैठाय मनमें सकुचाय बातें बनाय बड़े रावचावसे बोली कि अरी बीर ! तू थोड़ीसी बातमें अधीर होकर रिसानी जाती है मेरे तेरे तो आजतक कोई भेद छिपा नहीं रहा ले तेरी प्रसन्नता इसी में है तो सुन परन्तु अपनेही हृदयतक राखियो किसी अपने मित्रसे भी न भाषियो नहीं तो मेरी लज्जा जायगी तो मैं तेरे शिर अपना प्राणदूंगी तब चन्द्रावली ने कहा कि अरी बहिन ! मैं तेरे आगे सौगन्द खायकर कहती हूँ कि तू मेरी बातोंसे निश्चिन्त रहै परमेश्वर चाहेंगे तो इस मर्म को शारदा भी न पायेगी और अब मैं तेरे चित्तचोरको आन मिलावों तब चन्द्रावली नाम कहावों नहीं तो जगमें अपना मुख न देखावोंगी इतनी बात सुनकर राधिका प्रसन्न होकर बोली कि लो अब मैं अपना भेद तुमसे कहती हूँ चित्तदेकर सुनो कल मैं बृन्दावन की

शोभा देखने गई और लता बिटप फल फूलकी आभा लखिकर चित्तको हुलास देरही थी कि अचानक मेरी दृष्टि एक ऐसे सांवले सलोने स्वरूप पर पड़गई कि जिसके देखने से मेरी यह दशा होरही है जैसी तुम देख रहीहो ॥

अनुराग प्रकट करना राधिकाका चन्द्रावली सखी से और समझाना चन्द्रावलीका राधिकाको श्यामसुन्दरसे प्रीति छोड़ने और उनके ध्यानसे मुखमोड़नेको और अचेतहोना राधिका का चन्द्रावली का निराश बचन सुनकर ॥

बचन राधाका सखीसे ॥ दोहा ॥ अबनिजमनकीकहतहौं की जोबचनप्रमाण। अबतो तेरेह्वाथहै लाजमेरीअरुप्राण १ सवैया ॥ कालिहसखी उठि प्रातसमय गृहसे निकसी गई कुञ्जनओरैं। तहँदेखिअचानकरूपमहाछबि सागरनागर नवलकिशोरैं ॥ बशनेहभईसुधिदेहगई छबिचन्द्रकीदेखि छकेंजोचकोरैं। शिवराजकहैछबिकोबरनैअंगकोटिअनंग नकोमदछोरैं २ घनाक्षरी ॥ नागरनबेलेअनबेलेअनुराग भरे फिरतअकेले बनकुञ्जकी लतानमें। बांसुरी बजायो तामेंऐसीतानगायोआलीमोहिंको रोवायोमंदमंदमुसका नमें ॥ कासोंकहौंबीर उरअन्तरकीपीरमनधरतनधीर मेरे प्राननहिंप्रानमें। कहत शिवराजदुखकासों कहौं आज आलीमेरोमनमोहिलियो बांसुरीकीतानमें ३ चंचलचपल अटपटबंशीबटमाहिं डोलैं द्रुमद्रुमतर ठौर ठौरअटकैं। नयनरतनारेहियाहारेबांकीभौंहनपै घूँघरवारीअलकैं कपोलनपैलटकैं ॥ कैसेजीवोंबीरलागोबिरहाकोतीरउर वाके दृगबानमेरे हियबीचखटकैं। कहत शिवराजकैसेरूपको

समाजसाज कहत जो शारदा गणेशशेषभटकैं ४ वार्त्तिक भाषा ॥ जब राधिकाने अपने अन्तःकरणकी बातें और श्रीकृष्णचन्द्रआनन्दकन्दपर मोहितहोनेका बृत्तान्त और उनका रूप गुण चन्द्रावलीसे कहदिया तब तो चन्द्रावली ने आंखोंमें आंसू भरलिया और बोलउठी कि अरी प्यारी! तूने यह क्या किया इस कुमारअवस्था में यह बोझा अपने शिरपर लिया यह अनुरागरूपी प्रेत जिसके शिर चढ़ताहै फिर कोटियत्नसे नहीं उतरता है अन्त को जीवही लेकर छोड़ताहै मनुष्य तो भला किस गिनती में है इसने बड़ेबड़े दृढ़ासन देवतांओंका आसन डगमगाया और कितने दैत्यों को कुएँ झँकाया परन्तु मनोरथ इस के मारे किसीका पूर्ण न होने पाया बरन मनोवांछितके बदले कलंकका टीका उनके शिरोंपर लगाया देखो इन्द्र ने अहल्यापर मोहित होकर कैसा फल पाया कि किसी को मुँह न देखाकर मानससर में जाकर कमल की नाल में जाछिपा भस्मासुर श्रीपार्ब्बतीजी पर मोहित होकर भस्म हुआ शूर्पणखा रामचन्द्रपर मोहित हुई सो उसकी गति जैसी हुई सो तुमने सुनी होगी कि जैसा सुख पाया नारदजीने इसीहेतुसे बन्दरका मुख पायाथा कितने पुरुष और स्त्रियों को गिनाऊं जिसने इस कुमार्गमें चरणदिया वह यश को छोड़ अपयश लिया और इससंसार असार में बहुत दिन न जिया अभी सवेरा है इसशोच को छोड़ और इसमार्ग्ग से मुखमोड़ अभी अग्नि थोड़ी है थोड़े जल से बुझ जावेगी फिर अधिक होने से कुछ युक्ति न बनिआवैगी और जिसपर तू आसक्तहुई है सो वे बृन्दा-

बनबिहारी परब्रह्म परमेश्वरके अवतार हैं और सम्पूर्ण जगत् के आधार हैं केवल पृथ्वीके भार उतारनेके लिये अवतार लिये हैं और कितने देवता व दैत्योंका चित्त चोराय लिये हैं और अनेक ब्रजगोपियां उनके बिरहके सागर में डूबरही हैं पर वे किसी से कुछ प्रीति व बैर न रखकर किसी के बश नहीं हैं ऐसा न समझो कि वे तन के कोमल हैं मनके भी कोमल होंगे सो यह तेरा बिचार ठीक नहीं है क्योंकि स्वरूपवान् लोग रूपके अभिमान से मनमें बड़ा गर्व रखते हैं जिसने इनसे चित्त लगाया उसने मानो अपने शरीर को बिरहकी ज्वाल में जलाया टुक मेरी बातों को मानो और मनमें श्रीकृष्ण के रूप व शृंगार को न आनो यह निराश्रय बचन सुनतेही राधिका अचेत होगई और चन्द्रावलीने बहुत जगाया पर वह श्यामसुन्दर के ध्यान में ऐसी लीन थी कि आंखतक न खोली और न मुख से कुछ बचन बोली॥

रोना चन्द्रावलीका राधिकाकी दशा देखके और आना उसी अवसर ललितासखी राधिका से मिलने को और प्रतिज्ञा करनी राधिका से श्यामसुन्दर से मिलादेने की॥

जब चन्द्रावलीने राधाकी सच्ची प्रीति मुरलीमनोहर के साथ देखी तो इसने जाना कि बिना बिपिनबिहारी के दर्शन किये राधिका न जियेगी और मैंने यह क्या किया कि श्यामसुन्दर से प्रीति छोड़नेका इसको सम्मत दिया अब क्याकरूं किस स्थानपर जाऊं क्याकहूं किस को समझाऊं यह तो ऐसी अचेतहै कि कुछ सुनती समझ-तीभी तो नहीं ऐसा न हो कि मेरा बाज़रूपी भयानक बचन

सुनकर इसका पक्षीरूपी जीव पिंजरेरूपी शरीर से उड़ जावै और मेरे माथपर अपयश का टीका लगावै ऐसा कहकर अतिही पछिताय हाहा खाय चन्द्रावली रोनेलगी कि उसी समय ललिता सखी राधासे मिलने के निमित्त आई तो क्यादेखती है कि राधिका पर्यंकपर अचेतपड़ी है और चन्द्रावली भयातुर होकर रोरही है यह दशा देखकर ललिता पहिले तो घबराउठी परन्तु जब बृत्तान्त पूछा तब चन्द्रावलीको रिसाकर बोली कि अरीबावरी! तूने यहक्या किया राधिका को निराश करदिया और ऐसी बातें क्यों कहीं कि राधा मरनेपर उपस्थित होगई अच्छा जो हुआ सो हुआ अब तू धैर्य्य धर और मन में कुछ चिंता मत कर मैं राधाको सचेत कर अभी उठावोंगी और इसके चित्तचोरको इससे आन मिलावोंगी ॥ बचन ललिता सखी का श्रीराधाजी से ॥ दोहा ॥ उठनवनागरिलाड़िली कैसीपड़ी अचेत। मैंठाढ़ीबड़िदेरसे तुवमिलनेकेहेत १ मृगलोचनि दृगखोलियोकाह्यलगावतबार । उठप्यारीगरलागिजा करलूंतुझकोप्यार २ नयननखोलतलाड़िली ललिता थकीजगाय । मनोरसबिजयापियो सुधिनरही तनकाय ३ सींचतनीरगुलाबसों प्यारीमुखरस्वहाय । सूखत फूलगुलाबजिमिशीतपरेबिकसाय ४ वार्त्तिक भाषा ॥ जब ललिता ने राधिकाके मुखपर गुलाबका छींटा देकर अमृतसंजीवनी मंत्रपढ़कर श्रीकृष्ण बासुदेव का नाम पुकारा यह शब्द सुनतेही राधिकाके हृदयमें चेतहुआ मूर्च्छा छोड़कर लोचन उघारा और इस नाम के प्रताप से राधाकी निर्बलता छूटकर अंग अंग में उसके बल

का प्रबेश होकर मुखारबिंद शरदचंद के समान प्रकाशवान् होगया इसकारण मनुष्य को उचित है कि जब किसी को किसी प्रकारकी मूर्च्छा आवै तो (हरे कृष्ण वासुदेवाय इदंशक्तं कुरु कुरु स्वाहा) इस मंत्र से २१ बार जल अभिमंत्रित करके मूर्च्छितके मुखपर छिड़कदे तुरंत मूर्च्छा जातीरहैगी जब राधिका की मूर्च्छागई तो उठिके ललिताके गलेलगी और परस्पर श्यामसुंदर के गुणरूप की सराहना करनेलगी और ललिता बोली कि अब तू धैर्य्य रख मैं तेरे चित्तचोरको बहुत शीघ्र मिलावोंगी और तेरे हृदय की बिरह ज्वाल को अपनी युक्ति के नीरसे बेगि बुझावोंगी ऐसे आशा भरोसा देकर ललिता और चंद्रावली बृषभानुकुमारी से बिदा होकर अपने २ स्थानको गईं और राधा घरका कामकरनेलगी

ब्याकुल होना राधिकाजी का श्यामसुंदरको स्वप्नमें देखकर ॥ जब दिन ब्यतीत होकर रात्रिहुई और राधा शय्यापर जाकर सोरही तो स्वप्न में क्या देखती है कि बृन्दाबनबिहारी भक्तहितकारी चन्द्रमुख कमलनयन पीताम्बर पहिरे पीतपट ओढ़े किरीट मुकुट शिरपर धरे बैजयंती माल गरे तापहारनी चितवन किये त्रिभुवनकी शोभा लिये नयन के संयन चलाते मंद मंद मुसकुराते प्यारी के पर्यंकपर आयकर बैठगये और हित प्रीति रसरीति की बातें करनेलगे और बोले कि अज्ञान मनुष्य से कभी प्रीति न करै कि जो कभी भूलकर भी मन में स्मरण न करै सच है हम ने जैसा सुनाथा कि स्त्रियों की बातकी तथा नहीं होती इसकारण उनकी बातोंका बिश्वास न

करना चाहिये सो हमने अपनी आंखों देखा पर तुम्हें तुम्हारा दोष नहीं देता मेरे भाग्य में यही लिखाथा कि तुम्हारे कारण नित नया दुःख उठाऊं और रात्रि दिन तुम्हारी चिन्तामें गँवाऊं यह सब मेरी आंखोंका दोषहै जो मैं तुम पर दृष्टि न डालता तो काहेको तुम्हारा बाणरूपी नयन मेरेहृदयमें सालता अधिक क्याकहूं बेपीरसे पीरकहना न चाहिये इस ब्यथा को तो वही मनुष्य कुछ अच्छी तरह जानताहै जो नयनके बाणोंका घायल होचुकाहै भला जो कुछहुआ सो हुआ अब यह बतलावो कि ऐसे ही निबाहोगी कि प्राण चुराकर झलक तक न देखलावोगी अभी सबेराहै साफ कहदो आसरा बुरा होताहै तब तो राधिकाने कहा बस बस बहुत बातें और चतुराई बुरी होती है लो अब सुनो यह उलटा गिला मेरे शिर हुआ जो मैं ऐसी सादी सीधी न होती तो तुमसे आंखें चारकर लोकलाज कुलकान क्यों खोती जो चाहो सो कहो तुम्हारी बातोंका उत्तर कौन देसक्ताहै पर इतना तो कहोंगी कि हां मैंभी कुछ ऐसी निपटगँवारी नहींहूँ बरन बृषभानुकी कुमारीहूँ भलीभांति तुम्हारे मनकी जानती हूँ नोक पलक चाल चितवन पहिचानतीहूँ आजभी तो दो चार सखा संगमें लंगालाये होते मैं तो उसी दिन जानगई कि जब तुम बृन्दावनमें सखोंके संग फिराकिये और मुझे देखकर मेरीओर दृष्टिभी न किये और जो यह कहतेहो कि मुझे तुम्हारे बियोगका दुःख हुआ सो मैं भलीभांति जानतीहूँ कि केवल मेरे प्रेमको बढ़ाने के निमित्त यह झूँठी प्रीति देखलातेहो भला प्रेमभी कहीं

कहने से जानाजाता है वह तो सुगन्धकी भांति आंखों से प्रकट होजाता है हां जिसके तनमें तुम्हारे बियोगकी ज्वाला लगी होगी उसका प्राण बचना कठिनहै और जैसी दशा उसकी हुई होगी सो तुम देखते होगे परन्तु तुम ऐसे निर्दयी हो कि अपनी झलक तक नहीं देखलातेहो कि अपने दर्शनरूपी नीरसे हृदयकी अग्नि बुझाकर शरीर उसका शीतल करदेवो परन्तु तुम क्या करो परमेश्वरही को मुझे दुःख देना स्वीकार है अब मैं अपने तनकी व्यथा किससे कहों कौन सुनै समझैगा इस पीर गम्भीरको या तो मेरा मन जानता है या मेरा परमेश्वर इससमय अधिक क्या कहौं रैन थोड़ी कहानी बड़ी जब अवसर पाऊँगी तो सब कथा कह सुनाऊँगी ऐसे गिला अर्गलारस चशकी बातें करके प्यारीने चाहा कि प्रियतमको निजकण्ठ लगावैं और जीवन का फल पावैं कि अचानक आंखें खुलगईं और उस सांवली मूर्त्ति सलोनी सूरति को सन्मुख न देखकर महा उदास होकर रोनेलगी और बिरहाग्निमें जलकर जीवको खोने लगी फिर अछताय पछताय हाहा खाय शय्यापर जाय पड़रही ॥ इति श्रीराधाकृष्णचरित्रेऽनुरागलतिकानामकग्रन्थेराधास्वप्नेकृष्णदर्शनवर्णनोनामचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

आना चन्द्रावली और ललितासखीका प्रातःकाल राधिकाजीके पास और बर्णन करना राधिकाजीका व्यवस्था स्वप्नकी ॥

जब कि पिछले पहर दो घड़ी रात्रि रहगई तो ललिता अपने मन्दिर में नींदसे चौंककर शय्यासे उठबैठी और दीपककी ज्योति मलीन देखि चन्द्रको छबिछीन पेखि

आकाशकी अरुणाई निरखि मोतीकी शीतलताई परखि पानका स्वाद पहिचान पक्षियों की ध्वनि सुन कान चन्द्रावली को साथ लेकर ललिता राधाके स्थान पर आई और उसको शय्यापर पड़ी देखकर जगाने लगी और श्रीकृष्ण का गुणानुबाद गानेलगी तब राधिका बोली॥ बचन राधिकाका॥ सवैया॥ बिरहाकेरी पीर अधीर भई सखि नाहक मोहिं जगावतिहौ। वहिको गुण रूप बखानि सखी उरकामकोबाणलगावतिहौ॥ तुमतोचितमांझहँसी समझो ममअंतकीपीरनपावतिहौ। शिवराजकहैब्रजराज कहांझूठीबतियांबहकावतिहौ १ दोहा॥ अनतजायउप देशियो यहांसुनतहैकौन। एकतोघावकरेजको तापरछि ड़कतलौन २ वार्त्तिकभाषा॥ ललिताने कहा अरी प्यारी! मैं तुझपर वारी तुझे मेरे शिरकी सौं तू सच बतलादे यह तेरी क्या दशा हुई मैंतो कल तुझे समझाय बुझायके भलीचंगी बनायके गई थी मुझे जानपड़ता है कि तूने मेरी बातोंका बिश्वास न मानंकर मनमें बिरोग ठानकर फिर अपने हृदयमें बिरहकी अग्नि लगाली है मैंतो तुझ से अपनी बाचा हारचुकीहौं कि जो तेरे चित्तचोर को तुझसे न मिलाऊं तो अपना नाम ललिता न रखाऊं॥ प्रातःकालका स्वरूप बर्णन चौपाई॥ उठिये प्यारी भयो सकारा। चन्द्र बिदाभो गमने तारा॥ मुक्ताहार में शीतलताई। अरु आकाश अरुणता छाई ३ दीपकज्योति मलिन है कैसे। रबिमण्डलमें शशि छबि जैसे॥ लागत स्वाद पान को फीको। पक्षिम बोल सुहावंत नीको ४ उठो चलो बंशीवट जायें। कालिंदीको जलभरिलायें॥ कस अँगि

रात उसासैं लेती। दृग नहिं खोलत उतर न देती ५ ल
लित अकाश भानु परकाशे। बिमल सरोवर कमल बि
काशे॥ कुमुद चन्दको भयो बियोगा। चन्द श्वेत भो
ताके शोगा ६ ऐसी नींद हमैं नहिं भावै। यहिबेला कत
शयन स्वहावै॥ इतै चितै मेरीदिशि हेरो। बिरह बियो
ग हृदयसे गेरो ७ सुन्दररूप महाछबि धामा। चलि देखो
बसुधा अभिरामा॥ आनँदहूके आनँद मोहन। छबिसा
गर रति नागर सोहन ८ वाकी छबिहिं नयन भरिलीजै।
लोचन लाहु आज चलि लीजै॥ श्रवणन सुनो मनोहर
बयना। नयनन लखियो राजिवनयना ९ बार्त्तिकभाषा॥
जब ललिताने ऐसी प्रेमभरी बातें करके श्यामसुन्दरके
दर्शनका आसरा दिया तब तो राधिका को कुछ ढाढ़स
हुआ और कहनेलगी कि अरी बहिन! तेरी बातोंका तो
मुझे पूरा बिश्वास है परन्तु आज मेरे शोच करने का
कारण यह है कि आज स्वप्नमें वह चित्तचोर मेरा प्राण
अपनी त्रिभंगी छबि देखाकर फिर चोरा लेगया और
एक नया दुःख देगया और जैसी छबि मैंने रात्रि समय
स्वप्नमें देखी है सो तुझसे कहतीहूं टुक कान देकर सु-
नियो॥ घनाक्षरीछन्द॥ ओढ़ेपट पीतरङ्ग भूषण बिराजै अङ्ग
एरी मेरीओर कोर नयनके चितैगयो। नवलकिशोर दिन
थोरको रसीलोरूप मन्दमुसकान माहिं जादू कछु कैगयो॥
बैठि परयङ्कगयो मोकर निशङ्कगह्यो चाह्यो निज अङ्क
लयो फेरिधौं कितैगयो। कहत शिवराज ब्रजराज स्वपने
के मांझ मेरेढिग आयके चोराय चित्त लेगयो १० बार्त्ति-
कभाषा॥ ये बातें सुनकर ललिताने कहा अब तू धैर्य्यधर

मैं तेरे चित्तचोर को तुझसे आजही मिलावोंगी और उसका चित्त तुझसे चोरवावोंगी यह कहकर राधिकाका शृङ्गार करनेलगी॥

बर्णन शृङ्गार राधिकाका और गिरना उसका पृथ्वीपर श्यामसुन्दरका रूपदेखके अचेतहोकरसर्प काटनेका बहानाकरके॥

शृङ्गार राधिकाका चौपाईछन्द॥ नीलरङ्ग शोभित तनसारी। मानो चन्द्रघटामें कारी॥ लस्यो मांग मोती यहिभांती। श्यामनिशा तारागणपांती १ श्यामकेशगूँथीगहिचोंटी। जसलहरातनागिनीखोंटी॥ आवतलहरनिरखिकेतनमें। बिषचढ़िजातदेखिकेमनमें २ मुक्ताअरुपन्नाकेहारैं। जैसे गंगयमुनकी धारैं॥ नासामंनि मनको हरिलेवै। मांगो लाख बारनहिंदेवै ३ अर्द्धचन्द्र श्रुतिसंग बिराजै। ताकी द्युतिराकाशशिलाजै॥ चम्पकलीफूलीगलमाहीं। करन फूलकाननबिकसाहीं ४ बेंदीभालपंक्तिमुक्ताकी। चन्द्रनिकटजबिकचपंचिआकी॥ बेसरिसुभग नासिकाडोलति। सयननयनकरलिमनमोलति ५ नीलरङ्गचूरीकरकैंसे। चन्दनडारब्याललसजैंसे॥ सुभगकलाई कङ्कणमानी। चन्द्रकिरनिदामिनिलपटानी ६ नूपुरध्वनिमधुरेस्वरबोलै। गेरिस्मांधिमुनिनदृगखोलै॥ ऐसीभांतिशृँगार बनायो। कोईकबिउपमानहिंपायो ७ वार्त्तिकभाषा॥ जब कि सखियों ने राधिकाको कड़े छड़े हार हांसुरीआदि आभूषणों से आभूषित करदिया तो साक्षात् रमाकारूप होगई और ऐसी शोभायमान हुई कि जिसकी उपमा जगमा न हुई॥

दोहा॥ यद्यपि उपमा चन्द्रकी कहत सभी कबिलोग। परशशिमुखभाईलसै किमिरधामुखयोग ८ सो उपमा

नहिंजगमिली ढूँढ़्योसभीप्रबीन। श्रीराधाछबि सामने कामत्रियांछबिछीन ६ दृगसेमृगअरुसिंहकटिमुखतेचन्द्र लजाय। बयनसेकोकिलहंसगति कचतेअलिबिषखाय १० वार्त्तिकभाषा॥ इसभांति राधिकाका शृङ्गारकरके ललिता बोली कि अब मैं सखियों को साथलेकर पानी भरने के बहाने यमुनातट पनघटपर जाती हूँ और तेरे चित्तचोरको ढूँढ़लातीहूँ थोड़ी बेला उपरान्त तूभी बंशीबटको आना वहां श्यामसुन्दर तुझे मिलैंगे परन्तु तुम प्रथम उनसे न बोलियो उनका मृगरूपी मन तेरे बाण रूपी मृगनयनों से आपसे आप बिधजायेगा और यह मोहनी कामाच्चादेवीकी मैं तुझे बतलाये जातीहूँ इसको पढ़कर श्यामसुन्दरसे दृष्टि चार करदेना फिर तो वे तेरे बिन दामोंके चेरे होजायेंगे और जो कुछ तू कहेगी शिर आंखोंसे करलायेंगे ये बातें रसरीतिकी घातें बताके ललिता तो चन्द्रावलीआदि सखियोंको साथ लेकर जल भरने चलीगई और राधिका मनहीमन बिचार करने लगी कि कब उस सांवलीसूरति मोहनीमूरति को देखूँ और लोचन सुफलकरि लेखूँ ऐसा मनमें अनुमान सखियोंको पनघटपर पहुँचीहुईजान बड़े आनबानसे रूप के अभिमानसे बनठनकर बंशीबटको इसभांतिसे चली कि मानो लक्ष्मीजी सोलहों शृङ्गार किये मिलने की आश हिये क्षीरसागर को नारायणके पास जातीहैं और उससमय राधिका बन कुञ्जनकी हरी २ लतान सघन बाटिका बरबेलि बितान में कैसी शोभायमान थी कि जैसे श्यामघटा में दामिनी दमकती है कि अचानक

राधिकाकी दृष्टि अपने जड़ाऊ कङ्कणपर पड़ी और उसमें अपने चन्द्रमुखका प्रतिबिम्ब निरखिकर मनमें बड़ामान आनिके अभिमान ठानिके कहनेलगी कि मुझसी सुन्दरी तो त्रैलोक्यमें भी न होगी आज चलकर मनमोहन को अपनी छबि देखलावोंगी और उनके मृगरूपी मन को अपने नयनों के बाण से आहेर करलावोंगी मैं भली भांति जानती हूं कि वे मेरे स्वरूप पर मोहित हैं और मेरे दीपकरूपी मुखके सङ्ग पतङ्ग होरहे हैं ऐसा बिचार-ती हुई लाज संकोच किये मिलनेकी आश हृदयमें लिये बंशीबटके निकट जापहुँची ॥ दोहा ॥ नख रबि अर्द्ध बनाव करि चली बिरजकी बाम। सधपंचकमें दृशधरे मिलनेकी घनश्याम ११ वार्त्तिकभाषा ॥ जब कि श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द गर्ब्बप्रहारीभक्तहितकारी सर्ब्बउरधामीअन्तर्यामीने जाना कि राधिकाको अपनेरूपका अभिमान हुआहै और मेरा स्वभाव है कि मैं अपने भक्तोंके गर्ब्ब को नहीं रखता इसकारण इसकाभी गर्ब्ब तोड़ना चाहिये नहीं तो अभि-मानके जालमें फँसिके दुःख उठावैगी ऐसा विचारकर बृन्दावनविहारीने मोर मुकुट शिरधरे बैजयन्तीमाल गरे बांसुरी अधर से दिये त्रिभुवनकी शोभा लिये मधुर मधुर स्वरों से गाते मन्द मन्द मुसकाते राधाके सामने आन खड़ेहुये जब राधिका की दृष्टि अचानक श्यामसुन्दर पर पड़गई और टकटकी बांधकर मनमोहनका रूप रस न-यनन के मार्ग्ग पीनेलगी तब तो मनहरण प्यारेने और भी राव चावकर नयनों की कटाक्ष से राधिका के मन को अधिक घायल करदिया और श्रीकृष्ण की आखों के

जनेवे राधाके जीवके कण्ठकी फांसी होगये और श्याम-सुन्दरकीं अलकों की सुगन्ध से राधा ऐसी मातगई कि उसको तन मनकी सुधि न रही और नागिनी रूपी अलकों की लहर से राधिकाजी के अङ्ग २ में ज़हर व्यापि गया और मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी और गिरते समय बड़ेऊंचे शब्द से पुकार उठी कि अरी सखियो! दौंड़ियो मुझे कालेसर्पने काटलिया है यह लीला करके श्यामसुन्दर तो कुंजनकीओर किसी और ठौरको चलेगये और ललिता आदि ब्रजगोपियां प्यारीका पुकार सुनकर बड़ेबेगसे दौड़ीं और आनके क्या देखती हैं कि राधिका भूमिपर अचेत पड़ी है ॥ दोहा ॥ बशासनेहशोचतिमहापड़ी भूमिअकुलाय। तनमनकी सबसुधिगई रहीप्रीतिउरछाय १२ बनअहेरखेलनगईप्यारीचतुरसुजान। परअहेरआपु हिभईकृष्णदृगनकेबान १३ चौपाई ॥ राधाबचनसुनतब्रज बाला। पनघटसे धाईं ततकाला ॥ कोइ जलभरि कोइरी तिगागरी। धाईं अतिहि उतंग नागरी. १४ दौड़ि झपटि राधापहँ आईं। ताकी दशादेखि दुखपाईं ॥ कहत पुकारि अरीउठ प्यारी। कैसीपड़ी भूमि सुकुमारी १५ दोहा.॥ मुख मलीन तनछीनछबि बिबरणभो अँगअंग। धीरधरति नहिं राधिका थरथरकांपतअंग १६ अंगधूलि दृगंसजलहैं बिथु रेकेशअचेत। कहिंअभरनकहिंबसनहैंपड़ीउसासैंलेत १७ काहेआंखेंबंदहैं कैसीभई अबोल। लोचनकमल बिकासि के प्यारी मुखसे बोल १८ वार्त्तिकभाषा॥ जब सखियोंके बहुत जगानेपर भी राधिका नहीं जगी तब सब ब्रजगोपियां निपट उदास होकर परस्पर कहनेलगीं कि अब देर

माति कीजियो बेगही ओषधी दीजियो जब बिष इसकी नाड़ी नाड़ी में चढ़ि जायेगा तो ओषधी पिलाने से क्या बनिआवेगा बरन सब परिश्रम ब्यर्थ जायेगा तब चन्द्रावली बोली अरी बहिन! बेगही इसको बृषभानुके स्थान पर पहुँचाइयो मैं किसी गुणी बैद्य को पाऊं तो ढूंढ़लाऊं ऐसा कहकर मन में बिचार करनेलगी कि बृन्दाबनबिहारी को ढूंढ़ना चाहिये कदाचित् उनकी घूंघरवाली काली काली भुजंगरूपी अलकों का बिष इसके अंगमें न चढ़ गया होवै॥

ढूंढ़ना चंद्रावलीका श्यामसुंदरको और स्तुतिकरनी उनकी॥

ऐसा शोचकर चन्द्राबली श्यामसुन्दर को कुंजन में ढूंढ़ने निकली तो क्या देखती है कि बृंदाबनबिहारी भक्तहितकारी नखशिख से श्रृंगार किये त्रिभुवन की शोभा लिये चंचल नयन मधुरे बयन क्षण मीठे मीठे स्वरोंसे गातेहैं और क्षणमें बांसुरी अधरसे धर बजातेहैं बड़ी आन बानसे हरी हरी लतानसे चलेआते हैं जब चंद्रावली की दृष्टि श्यामसुन्दर पर पड़गई तो पहिले तो उसने ईश्वरता भावसे कृष्णचन्द्रको सांष्टांग दंडवत् की पीछेसे रुखाई बदलकर बोली अरेवाह! आपने भला चलन सीखाहै धन्यहो महाराज क्यों न हो और धन्य है आपके माता पिता और गुरु को जिसने आपको ऐसी बिद्या पढ़ाई है कि किसी को अपनी सांपिनी रूपी अलकों से डसादिया और किसी को नयन के बाणों से घायल करदिया किसी का प्राण बांसुरी की तान से ले लिया किसी का मन मृदुमुसकानमें मोहलिया आपका

गुण में कहांलों वर्णनकरों आप सर्व गुणों से भरे हुये बड़े गुणआगरहैं अभी तो आपमें इस थोड़ी अवस्था में इतने गुणहैं कि जिसको अपनी चाल चितवन आनबान देखादेतेहौ उसको बावला बनाकर घरबार उसका छोड़ा देतेहौ मैं जानतीहौं कि जब तुम्हारी किशोर अवस्था होगी तो कितने मनुष्योंका प्राण तुम्हारे बिरह की व्यथा से जातारहैगा बिशेषकर ब्रजगोपियां जो कि अभी से तुम्हारे नयन के बाणों से घायल होरही हैं कोई काहे को जीती बचैंगी अभी तो माखनही चुरानेसे तुम्हारा नाम गोकुल में माखनचोर प्रकट हुआथा परन्तु जब से तुमने मनुष्योंका चित्तचुराना आरम्भकिया तब से तुम्हारा नाम बरसाने में चित्तचोर प्रकटहुआ है भला अब किधर को बहके हुये चलेजातेहो टुक मेरी बातों को सुन तो लो सब ब्रजगोपियां तो तुम्हारे बिरहसागर में डूबतीही थीं परंतु अब तुमने बृषभानुकुमारी को जो कि बरसाने ग्राम के अधिपतिहैं अपनी सर्परूपी अलकों से डसाकर उसके अंग अंगमें बिषकी ज्वाला लगादीहै यह आपको उचित न था कि एक अज्ञान मनुष्यको वे अपराध इतना दण्डदेवैं भला जो हुआ सो हुआ अब बेगही चलियो और अपनी तापहारिणी चितवनसे चितैकर और अमृत संजीविनी छबि देखलाकर उसके जीव को बचाइयो नहीं तो तुम्हारे बिरह में उसका प्राण निकला चाहताहै और तुमको अपयश मिला चाहताहै चन्द्रावलीकी प्रीति भरीहुई बातें सुनकर श्यामसुन्दरने हँसकर कहा अरी दीवानी! भला तूने भांग तो नहीं खाई है जो ऐसी बकबक

लगाई है कैसी बृषभानुकुमारी और कैसा सांपका कटाना और विषका चढ़ाना मैंने तो उसका नामभी आज तक नहीं सुना और देखना कौन कहै तूने भला कलङ्क मुझे लगायाहै मैंने जैसा अपने सखाओं से सुनाथा कि बरसानेकी स्त्रियां बड़ी चञ्चल चपल होती हैं और अपनी बातचीत चितवन चाल देखाके नयनकी कोर भौंहन की मरोड़ से बातें करती हैं और अनेक आभा करके मनको हरती हैं सो हमने आज अपनी आंखों से देखा ये बातें सुनकर चन्द्रावली ने कहा कि महाराज अब चतुराईकी बातेंकर देर मतकीजो बेगही उसकी सुधिलीजो नहीं तो प्राण राधिका का निकल जायेगा और संसार आपको अपयश का टीका लगायेगा और संसार में आपका नाम जायेगा यह सुनकर बृन्दावनबिहारी रूखे होकर बोले अरे तू मुझे क्यों इतना धमकाती है मैं तेरे डराने से नहीं डरता भला तब तो चलता भी अब तेरे डराने से किसी भांति न जाऊँगा तब तो चन्द्रावली श्यामसुन्दर को क्रोधित जान अतिभयमान बोली कि हे जगत्तारण जगत्कारण जगन्नाथ करुणाकर केशव! त्रिभुवनमें ऐसा कौनहै जो तुमको डराने सकै आप तो परब्रह्मका अवतार संमस्त जगदाधारहैं और सम्पूर्णसृष्टि जो कि तीनप्रकार जीव-मूल-धातु के रूपसे स्थितहै केवल आपही का स्वरूप है आपकी लीलाओं और कौतुकों को कौन जानसक्ता है कि मांया जिसकी हंसी होकर यह संसार आपका खेल है आपकी पलकका उघरना संसारका प्रकट होजाना है और बन्द होजाना

महाप्रलयका कारण है हे करुणानिधान ! मैंने जो नारि स्वभाव व अज्ञान की राह ईश्वरभाव छोड़कर मनुष्य कीसी बातें कीं सो दयाकी राह मेरे अपराध को क्षमा कीजिये ॥

स्तुतिकरनी चन्द्रावलीसखी की श्यामसुन्दर के सन्मुख बिराट्रूप भगवान् की ॥

चौपाई ॥ तुम दयाल करुणामय स्वामी । अलख अगोचर अन्तरयामी ॥ सर्वमयी सर्बथा निवासी । अगुणरु अकल अमल अबिनासी १ यदपि तिहारो तन संसारा । पर तुम रहत जक्तसों न्यारा ॥ हरण तापत्रय आनँद कन्दा । ज्योति स्वरूप सच्चिदानन्दा २ तुम्हरी ज्योति सकल परकाशी । सूर्य्य चन्द्र तारागण राशी ॥ शीश अकाश चरण पाताला । उदरमांझ भो जगत बिशाला ३ सूर्य्य चन्द्र दोउ नयन तिहारे । जाकी द्युति त्रिभुवन उजियारे ॥ पलक उठन दिन बैठन राती । नित दिन राति होति यहिभांती ४ हैं शिर केश घटा घनकेरी । दामिनि द्युति आभूषण केरी ॥ भोर जो छायाहै चिबुकनकी । हैंपरछाहिं सांझ अलकनकी ५ यह जगमाया हँसी तुम्हारी । सृजन हरन जगखेल धमारी ॥ हैमुख अग्नि पवनहै श्वासा । श्रम जलबिंदु बुन्द आकाशा ६ रोम बृक्ष अरु अस्थि पहारा । बारिद गरजन शब्द तुम्हारा ॥ लख अरु अलख जहां लगि जेते । केवल रूप तिहारो तेते ७ अखिल भुवन अग जगसंसारा । सर्बमयी तुम बेद उचारा ॥ सुर द्विज सन्त धेनु महिलागी । नरतनु धर्यो धर्म अनुरागी ८ यह बिराट स्तुति प्रभुजीकी । कह शिवराजज्ञानगथ नीकी ॥ करि सुमि

रण तन मनसे ध्यावै। बांछित पाय मुक्तिपद पावै ९ दोहा॥
निराधार निरकल निरस स्वयं सच्चिदानन्द। निराकार नि
र्गुण पुरुष सगुण भयो ब्रजचन्द १० इति श्रीराधाकृष्ण
चरित्रेऽनुरागलतिकानामकग्रन्थे विराट्स्तुत्यादिवर्णनो
नामपञ्चमस्सर्गः ५॥

वार्त्तिकभाषा॥ फिर चन्द्रावलीने कहा कि हे दीनानाथ!
मेरे तो घट घटकी सब जानतेहो मनोरथ अपना क्या
कहौं जब मुरलीमनोहरने अपने बिराट्रूपकी स्तुति
सुनी तो चन्द्रावली को बड़ीज्ञानी जान और अपना
भक्त मानकर बड़ेप्रेम से बोलें कि अय प्यारी! अब तू
मति घबरावै राधिका मरने न पावैगी वह मेरे ध्यानके
समुद्र में डूबकर मेरे स्वरूप को अपने हृदयकी आखों
से देखरही है मैं सर्बब्यापी हूं जो कोई सत्प्रेमन से मेरा
ध्यान करके प्रकटकी आंखें बन्दकर हृदयके नेत्रोंसे मुझे
देखा चाहता है तो मैं अपना स्वरूप अंगूठे के प्रमाण
बनाके उसके हृदयमें प्रवेश करताहूं कि जिसके दर्शन
से आनन्दित होकर अपने तन मनकी सुधि बिसारि
देताहै और उस बेसुधी को ध्यान अथवा समाधि कहते
हैं अब अधिक तुझसे क्याकहूं तू तो आप बड़ी चातुरी
और ज्ञानी है और मैं तेरे ज्ञान व चतुरता के कारण
तुझपर मोहित होकर तेरा बिनदामोंका चेरा होरहाहूं
ऐसा कहकर बृन्दावनबिहारी राधिका का प्रेम स्मरण
कर कमल नयन में प्रेमका जलभरिलाये और प्रेमभरे
हुये बचन कहकर चन्द्रावली से कहा कि अब तू किसी
बातकी चिन्ता मनमें मतरख अवसर पाकर तेराभी म-

नोरथ पूराकरोंगा और जिनको मेरा सच्चाप्रेम है उनकी सब कामना पूर्णकर दोनों लोकका आनन्द दूंगा परन्तु इस समय तेरे साथ चलने से बात न बनिआवैगी मैं अपने स्थान को जाताहूं और तू बरसाने में जाकर राधिकाके माता पिता से मेरे बुलवाने को कहियो जब वे मेरे माता पिता से मुझे मांगकर लेजावैंगे तो मैं तुरन्त चलकर उसका विष उतारलूंगा यह कहकर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द तो अपने धाम को पधारे और चन्द्रावली पलट के उस स्थानपर फिरआई जहांपर राधा अचेत पड़ीथी और ललिता आदि सखियां उसको बृषभानुजीके स्थानपर लानेकी तय्यारी कररही थीं॥

लाना ललिता आदि गोपियों का राधिका को अचेतताकी अवस्थामें बृषभानुजीके स्थानपर और बर्णन करना बृत्तांत चन्द्रावली इत्यादि सखियोंका कीर्त्ति से॥

दोहा॥ ललिता आदिक सब सखी रोवत सहज सनेह। बंशीबटसे लेचलीं बृषभानूके गेह १ सोरठा॥ कीरति जाको नाम बामा श्रीबृषभानुकी। लाईं ताकेधाम डारिदियो परयङ्कपर २ माता हाहा खाय देखत राधाकी दशा। पड़ी भूमि भहराय हाय दयी कैसीभई ३ दोहा॥ सब सखियनसे पूछती कीरति हाहा खाय। कौन ब्याधि याको भई कहो मोहिं समझाय ४ चौपाई॥ सुखमा आदिक सखी सयानी। सजल नयन कह आरतबानी॥ यमुना पनघट रुचिर बिशाला। जलभरने गमनी ब्रजबाला॥ बंशीबट बन बिटप घनेरा। तेहिऔसर राधा तहँ टेरा॥ अय सखियो बेगिहि सुधि लीजो। दौरो बीर बिलम्ब न कीजो॥

दोहा॥ ललिता अरु चन्द्रावली सभी नारि चतुरङ्ग। अरी बीर टुक दौरियो मोको डसो भुजङ्ग ५ सुनते राधाको बचन धाईं सब ब्रजबाल। पड़ीभूमि जहँ लाड़ली आईं तहँ ततकाल ६ ऐसी दशा बिलोकिके लाईं धाम उठाय। मातु बेगि अब कीजिये ओषधि मूल उपाय ७ इति श्रीअनुरागलतिकानामकग्रन्थेश्रीराधाकृष्णचरित्रे राधामन्दिरागमनादिवर्णनोनामषष्ठःसर्ग्गः ६ ॥

बार्त्तिकभाषा॥ कीर्त्ति ब्रजगोपियोंसे ये बातें सुनकर बहुत उपायकिये परन्तु राधिका उस मोहनीमूर्त्तिके ध्यानमें ऐसी मगनथी कि एक सांसभी न ली तबतो कीर्त्ति निपट उदास होकर रोनेलगी और बृषभानुजी को कहला भेजा कि राधिकाको सर्पने काटलियाहै सो जल्दी उपाय कीजियो यह सुनिके बृषभानुजी आये और राधिकाकी दशा देखि बैद और गुनियोंको बुलाके कहा कि जो कोई इसका बिष उतारकर इसको आराम करेगा उसको मुँहमाँगा द्रब्य दूंगा यह सुनकर मनुष्योंने बड़े बड़े योग युक्ति किये परन्तु राधाने शिर न उठाया जब यह बृत्तान्त बरसाने में बिदित हुआ तो घर घरके पुरुष और स्त्रियां देखने को आये और परस्पर अनेक तरहकी बातें करनेलगे कोई कहता था कि इसको सर्प्पने नहीं काटा यह कुछ औरही भेव हैं कोई कहता था कि इसपर कोई देवी या देव हैं॥ दोहा॥ कई कहत विष ब्यालसे राधाभई अचेत। कई कहत यह बिष नहीं याको लागो प्रेत ८ बैद गुनी सब थकिरहे करि करि अपनी दौर। सारभेद जान्यो नहीं कहत औरकी और ९ छिड़कत नीर गुलाब कइ कइओ

षधि घिसिदेत। कइ मंतरपढ़ि झारते कुँवरि न होत स
चेत १० व्याधि और ओषधि और कहु कैसे गुनहोय।
मधुर स्वाद कैसे लहै पड़े शकरमें नोय ११ बचन चन्द्रावली
का कीर्ति से॥ तब बोली चन्द्रावली मातु सुनिय मम बात।
कछुक बंचन भाषतचहौं पर मैं तुम्हैं डेरात १२ टुक मेरी
सुनिलीजिये मनमें शोच बिचार। व्याधि जानि पहिचा
निके तब कीजे कछुसार १३ होनहार स्वैहोतहै तामें फेर
न सार। भाललिखे विधि अङ्कको कोमेटै संसार १४ बं
शीबट अटपट महा गई लाड़ली भोर। तहां अचानक
मिलिगयो नन्दलाल चितचोर १५ ताकी छबि देखतम
हा उपज्यो हिय अनुराग। स्वैमूरति उरमें बसी उत्तम
मनकी लाग १६ स्वैमूरति उरधाममें देखतही यकनयन।
लाज सकुचबश लाड़ली नहिं बोलत कछु बयन १७ बचन
कीर्तिका चन्द्रावली से चौपाई॥ चन्द्रावलिकी अटपटि बानी। सु
निकीरति अतिशय रिसियानी॥ तेरो मन चंचल अति
डोलत। अरीगँवारि विचारि न बोलत १८ भई बावरी
बिजया खाई। तेरीमति कैसी बौराई॥ तेरीबात मोहिं
नहिं भाती। ऐसी हँसी न मोहिं स्वहाती १९ बचन चन्द्रावलीका
सखियों से दोहा॥ सुखमा आदिक गोपियां इतर सखी समु
दाय। सारभेद चन्द्रावली सबको दियो बताय २० सोरठा॥
सांचि कहतहों बीर मानों या मानों नहीं। याके उरमें पीर
कृष्ण दृगनके बानकी २१ बचन कीर्तिका चन्द्रावली से रिसाकर
सोरठा॥ कीरति उठी रिसाय अरी बावरी क्याबकै। तू अ
पने घरजाय होनी होय सो होयगी २२ दोहा॥ अतिनि
लज्ज चंचल महा भाषत है अनरीति। निपट बालिका

राधिका क्याजानैं रसरीति २३ चन्द्रावलीका बचन कीर्त्तिसे दोहा ॥ मानो या मानो नहीं हितकी कहौं सुनाय। हैबालक पर राधिका बिधिसे कहां बशाय ॥ बचन कीर्त्तिका दोहा ॥ तुम युवती जोबनमती कहत औरकी और। मैं रोवत तुम हँसतिहो ऐसी महाकठोर २४ बचन चन्द्रावलीका कीर्त्तिसे सौगन्द खाकर दोहा ॥ तेरेहितकी कहतहों जानैं श्रीभगवान। मात बात सांची कहों मोहिं तिहारी आन ॥ वार्त्तिक भाषा ॥ जब चन्द्रावलीने कीर्त्ति को एकान्तमें लेजाय कीर्त्तिका हाथ पकड़ निजमुख से सौगन्द खाय सब बृत्तान्त राधिका के बनबिहार आदि और अचानक दृष्टि पड़नी राधिकाकी बिपिनबिहारी पर और मोहित होकर व्याकुल होना श्रीकृष्णके बिरहमें और श्यामसुन्दर व राधासे बंशीबट में भेट होने इत्यादिका बर्णन किया और कहा कि तुम गोकुलमें जाकर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द नन्दमहर के लड़के को लेआवो जैसे वे अपनी तापहारनी चितवन से राधिकाकी ओर चितैदेंगे तैसेही उसका हृदय जो बिरह की तपनि से तप्त होरहा है शीतल होजायगा और जैसे होवै ओषधी रूपी अपना रूप रस उसके नयनों के मुख से उसको पिलायेंगे वैसेही उसके सब कलेश कट जायेंगे ॥

जाना कीर्त्तिका बरसाने से नन्दगांव को नन्दमहरके स्थानपर और आना बृन्दावनबिहारी का बरसाने में बृषभानुजी के स्थानपर और सचेत करना राधिका को श्यामसुन्दर का अपनी अमृतसंजीवनी छबि देखलाकर ॥

यह बचन चन्द्रावली का सुनके कीर्त्ति नन्दरायके

धाम में जाय अति बिनतीकरि शिरनाय नन्दरानी से बोली अयि बहिन! मैं तेरी बिनदाम की चेरीहूं मुझपर दयाकर और मेरेदुःख को हर नन्दरानी बड़ेआदर मान से कीर्त्ति को देखतही उठखड़ी हुई और गले मिलने उपरान्त और कीर्त्ति को उदासिनी देखकर घबराके बोल उठी अरीबीर! कुशल तो है तू मुझे अकुलाई हुई कैसी देखलाई देती है कीर्त्ति बोली तुम्हारे पुण्यके प्रताप से आजतक तो आनन्द था परन्तु आज मेरी लड़की को जो अभी केवल सातबर्षकी है सर्पने काटलिया है इसी कारण इस समय मेरेचित्त में बड़ी उद्विग्नता है सो मैं तुम्हारे लाल को बुलाने आई हूं तात्पर्य्य यह है कि ये सर्पके बिष उतारनेका मन्त्र अच्छा जानते हैं सो दया की राह अपने लाड़िले को मेरेसाथ करदीजिये इनको खान पान इत्यादिका किसी प्रकारका दुःख न होने पावैगा तुम निश्चिन्त रहियो और मैं बहुत बेगिसे कृष्ण को तुम्हारे पास पहुँचायदोंगी ये बातें सुनकर यशोदा हँसनेलगीं और कहा कि अरीबहिन! मेरा मोहनप्यारा तो केवल अभी आठबर्षकी अवस्थाका अज्ञान बालक है मन्त्र तन्त्र क्याजानै अभी तो वह निपट नादान है उसको केवल खाने खेलनेका ज्ञानहै परन्तु तेरा उपकार उससे होवै तो तू लेजा संसारमें परोपकारके समान दूसरा यश क्याहै ऐसा कहकर नन्दरानीने श्यामसुन्दर को कीर्त्तिके साथ करदिया और कीर्त्ति वहांसे चलकर एक बातकी बातमें श्यामसुन्दर को साथमें लियेहुई राधा के पास आनपहुँची कि इनको देखतेही चन्द्रावली पुकार

उठी कि अरी सखियो! देखियो नन्दकिशोर चित्तचोर आनपहुँचे जब राधिकाने श्यामसुन्दरके आनेकी सुधि जानी तब तो मनमें बहुत हर्षानी और इस सुखके सामने त्रिभुवनकी सम्पदा तुच्छकर मानी और इसभांति आनन्दित हुई कि मानो तपस्वीने तपकर अपने श्रम का फल पाया और श्यामसुन्दरने हाथ मुख धोय आचमनकर चुल्लू में जलले कुछ मन्त्रपढ़ जल अभिमन्त्रित किया और लक्ष्मणयती गौरापार्बती बासुकीनाग और आस्तीक का नामलिया और वह जल राधिकाके मुखपर छिड़कदिया जैसे वह अमृतरूपी जल राधिका के मुखपर पड़ा तैसे वह सचेत होकर बस्त्र आभूषण सम्हार के उठ बैठी और मनहरण को अपने सम्मुख खड़ा देख कर ऐसी आनन्दित हुई कि मैं लिख नहीं सक्ता ॥ बचन गोपियोंका परस्पर लावनी की ध्वनि में॥ जिनके नयनोंके बाणप्राण बिधजाये। नटनागर स्वइच्छितचोरबैदबनिआये १ कर झोलीमंत्रालियेजंगलकीबूटी। अतिमन्त्रयन्त्रबहुगुणी बड़ेकरतूती २ घायलकरकेफिरआयओषधीलाये। बैरी जसआगलगायभरनजलधाये ३ यहछन्दवन्दऔचरित सभीनटंबरके। राधाबरनन्दकिशोर नवलनागरके ४ अलकैंजसकालैनागे भरेबिषफनमें। जिनकेदेखतचढ़ि जातज़हरतनमनमें ५ सोहैकुण्डलमुकुटबनमालपिताम्बरराजे। रतिनागररूपललामकामलखिलाजै ६ हैंअलख पुरुषअवतारआदिअबिनासी। भक्तनकेकारणआयभये ब्रजबासी ७ छिनमेंकरदेंगेदूरब्यथासबतनसे। शिवरा जदेख यदुराजएकचितवनसे ८॥ दोहा॥ देखत छबि घन

श्यामकी ह्रीप्रीति उरछाय। प्रेमबिवश भइ लाड़िली प्रीति न हृदय समाय ९ ॥ सोरठा ॥ यकटक रही निहारि मृगलोचनि दिशिश्यामकी। सकत दृष्टि नहिं टारि लोक लाज कुलकानितजि १० ॥ वार्त्तिक भाषा ॥ यह चरित्र देखकर कीर्त्तिने मोहनप्यारे को गोदमें उठाय छाती से लगाय बारंबार मुखचूमि प्यारकर माखन मिश्री मेवा मिष्टान्न कछुक पकवानादि भोजनकी बस्तु श्यामसुन्दर के सम्मुख रखके बोली कि अय लाल! तुम को यहां आये बड़ी बेर हुई भूख लगी होगी कुछ भोजन कर लीजियो तब स्थान को प्रस्थान कीजियो ये बातें सुन कर श्यामसुन्दरने कुछ मेघा आदि खाय लिया और बहुत बिलम्ब जानकर घरजाने का मनोरथ मनमें ठानकर कीर्त्ति से बोले कि मुझे यहां आये बड़ी बेला हुई मेरे मातु पिता मुझे बिना घबराते और दुःख पाते होंगे जो आप की आज्ञा पाऊं तो घर को जाऊं जो परमेश्वर चाहेंगे और मैं किसी दिन फिर अवकाश पाऊंगा तो फिर आपके चरणों में शिर नाऊंगा ऐसे नम्र बचन श्यामसुन्दरके मुखसे सुनकर कीर्त्ति और बृषभानु जीने श्यामसुन्दर को गोदमें बैठाके जीवनका फूल पाके चंद्रमुख की शोभा देख आंखें शीतल कीं और आनन्द के सागरमें मग्न हो आंखोंमें प्रेम का जलभरकर बोले कि अय जगजीवन जगदानन्द! मैं तुम्हारी कहांलों प्रशंसा करों और इससत्कार के बदले तुम्हारी क्या टहलकरों कि तुमसे उऋणहोजाऊं तुमने मेरी पुत्री जिलाकर मुझे जीवदान दिया और मुझको अपना ऋणी किया अब मैं

जन्मपर्यंत तुम्हारा ऋणी बना रहोंगा धन्यहै तुम्हारी
माताको कि जिसके गर्भ में तुमने बासकिया और धन्य
है तुम्हारे पिताको जिसने तुमको गोदमें ले नित नया
मोद लिया और धन्य है गोकुलबासियों को जो नित्य
प्रति प्रातःकाल तुम्हारा दर्शन करते हैं वो जीवन्मुक्त
होकर आनन्द से भरते हैं ये बातें कहकर बृषभानु जी
और कीर्त्ति मन में बिचारने लगे कि यह बर महासुंदर
अतिनागर छबि सागर मेरी कन्या के योग्य है यदि
नन्द व यशोदा स्वीकार करते तो मैं राधिका का विवाह
श्रीकृष्ण के साथ करदेता ऐसे शोच बिचार बृषभानु
जीने कई एक ग्वाल बाल नन्दलाल के साथ करदिये
और निज मन्दिर जाने की आज्ञा दी इतने में ललिता
आदि ब्रजगोपियां कीर्त्ति के पास आईं और चन्द्रा-
वली सखी हँसीकी राह ठठोली कर बोली अरी माई!
लीजियो श्याम वो श्यामा तुमको मुबारक होवें और
तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होवै भला यह तो बताओ कि
अब मेरी बातों का बिश्वास तुमको हुआ या अब भीनहीं
यदि मेरी बातें सत्यहैं तो मुझे क्या पारितोषिक देतीहो
जो बस्त्र व भूषण देनाहो सो बेगही दीजियो अब बिलम्ब
मत कीजियो ऐसे हास बिलास की बार्ता करती हुई
चन्द्रावली सखियों के बीच कीर्त्तिका अंचल पकड़े हुई
झगड़ती थी और हँस हँसकर कहती थी कि अब मैं
अपना इनआम तुमसे लेलूंगी तब तुमको छोड़ूंगी और
जानेदूंगी ये आनन्दभरी हुई बातें सुनकर कीर्त्ति आन-
न्दित होगई और चन्द्रावली को गलेलगाकर बोली कि

अय बेटी! जिस बस्तुकी तुझे कांक्षा होवे सो मेरे धाम से
लेजा यह कहके ब्रजगोपियों को बड़े आदरमान से
बैठाय ललिता व चन्द्रावली की बहुत कुछ प्रशंसा की
और बोली कि नन्दलाल को लातेसमय मैंने यशोदाजी
से कहाथा कि मैं तुम्हारे लाल को बहुत बेग से तुम्हारे
पास पहुँचायदूंगी सो श्यामसुन्दर को आये बड़ीबेर हुई
अब चलो इनको पहुँचायके नन्दरानी से गले मिलआवें
ऐसा कहके कई गोपियों को साथलेके कीर्त्ति मोहनप्यारे
को यशुमतिके पास लाय हाथजोड़ शिरनाय बिनतीकर
बोली कि धन्य है तुम्हारे जीवनजन्म को कि त्रिभुवन-
पति को निज पुत्रमान बालकसमान गोदमें खेलाती हो
और महाआनन्द को प्राप्त होकर त्रिभुवन का सुख उ-
ठाती हो इसी भांति कीर्त्ति यशोदा और नन्द व गोकुल
बासियों की सराहना करके नन्दरानी इत्यादि से गले मि-
लने उपरान्त गोपियों को साथ लेकर अपने स्थान को
प्रस्थान करआई और राधिकाके हाथ से बहुतसा दान
कराय अतिआनन्द मनाय नृत्य गीत राग रंगकर बड़ा
महोत्सवकियां और उसी दिनसे लाड़िली को नंद मह-
रके धाम जाने व खेलने की आज्ञादी जब राधिका खेलने
के मिसु नंदजीके घर आतीथी तो यशोदाजी उसका रूप
देखकर कहतीथीं कि यह लड़की मेरे श्यामसुन्दरके संग
विवाहकरनेकेयोग्य है जो इसके मातापिता स्वीकारकरते
तो मैं इसका बिवाह अपने लालकेसाथ अवश्य करलेती
ऐसा बिचारकर निजप्रेम प्रचारकर निजकरसे राधाका
श्रृंगारकर कृष्ण राधाको एक संग खेलते हुये देखि वो

श्यामश्यामाकी छबि हृदयमें लेखि यशोदाजी को नित नया आनंदहोनेलगा और श्याम व श्यामा परस्पर एक दूसरेकी छबि देखि आनन्द देनेलेनेलगे॥ वार्त्ता राधा व कृष्ण की परस्पर में वियोगकी अवस्थाकी। वचन राधिका का श्रीकृष्णजी से॥ दोहा॥ मनमोहन तुमबिनममगतिइमिभई देखतहोजसश्याम। मनमोहन तवध्यानमें भयोरूपममश्याम १ मेरीभीतुमकोसुरति कछुकरहीयदुराय। तुमकोसौगँदनंदकीसांचीदेवबताय २ श्रीकृष्ण का वचन राधिका से। दोहा॥ सौगँदबाबानन्दकी और तिहारीआन। मुझेचयनतुमबिननहींजानैंश्रीभगवान ३ केवल तवमूरतिउरइमिबसी जिमिमुकुरमांझपरछाहिं। केवल दृगसेदेखियेमिलनगहनकीनाहिं ४ राधिका का वचन श्यामसुन्दरसे। दोहा॥ औचकबंशीबटविषेपड्योदृष्टियदुराय। चंचलरूपदिखायकेचितलेगयोचोराय ५ तादिनसेब्याकुल भईतुमदरशनबिनश्याम। छिनछिनदुखदूनोभयो निशिदिनआठोयाम ६॥ वचन श्यामसुन्दरजीका राधिकाजी से। दोहा॥ जादिनसेतुमरूपपर परेहमारेनैन। खानपानसनमान सब गयोहृदयसेचैन ७ जलबिनजोगतिमीनकी अरु मणिबिनुजिमिब्याल। तैसेतुझबिनलाड़िलीममनभयो बिहाल ८॥ वचन प्यारी का प्रीतमसे। दोहा॥ बिरहबियोगकिपीरमें मैंचाहौंविषखान। परआशातुममिलनकीहठ करिराखेउँप्रान ९ जो प्रथमैंमैंजानती प्रीतिकेरसको स्वाद। खायज़हरमरिजावती कतयहहोतविषाद १० वचन वृंदावनविहारी का लाड़िली से। दोहा॥ अधरमधुरकीलालसाभयोसर्बोरसफीक। जबसेतेरोरूपरसलगोदृगनको नीक ११ एकहुपलओझलदृग्योतवस्वरूपकोध्यान। अबलग

घटमेंकिमिरहतप्यारीमेरोप्रान १२ सोरठा ॥ कहतपरस परवयन श्रीराधाअरुकृष्णजी। स्रवतप्रेमजलनयन प्रीति बेलिसींचतमनो १३ गहिभुजकण्ठलगाय प्रीतिपूरसपर उरउमँगि। सोसुखबरणिनजाय शारदऔरगणेशपै १४॥

इति ग्रन्थसमाप्तिके वर्षमासादिका बर्णनं ॥

दोहा ॥ नभरुवेदअरुनन्दशशि बर्षविक्रमीमानि। रुचिरमासशुचिपूर्णिमा सुरगुरुवारबखानि ॥ ऐसोसमयसुहावनो चहुँदिशिमचोअनन्द। चरितसुराधाकृष्णको पूरण भयोसुछन्द ॥ द्विजबररामानन्दसुत बिदितनामशिवराज। रच्योग्रन्थशृङ्गाररस कृष्णभक्तहितकाज ॥ पढ़ैपढ़ावै जोसुनै करियदुबरकोध्यान। आशिषयुतस्मरणमम करै सोसुजनसुजान ॥ नेमदानस्नानव्रत संयमजपतपयाग। सारबचनशिवराजको एकब्रह्मअनुराग ॥

इति श्रीराधाकृष्णचरित्रेशिवराजमिश्रविरचितेऽनुरागलतिकानामकग्रन्थे राधानन्दादिवर्णनो नामसप्तमस्सर्ग्गः समाप्तः ७ ॥